RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

वर्ष : 12 अंक : 08 16-30 अप्रैल 2026

बिनु पानी सब सून

सम्पादकीय

आतंकवाद की विषबेल

हाल ही में लखनऊ में एक बड़ी आतंकी साजिश का भण्डाफोड़ हुआ है। इन आतंकियों की गिरफ्तारी ने एक बार फिर राज्य की आन्तरिक सुरक्षा को लेकर गम्भीर सवाल खड़े कर दिये हैं। यह घटना केवल कानून–व्यवस्था की सफलता भर नहीं है, बल्कि यह उन चुनौतियों की भी याद दिलाती है जिनसे आज का समाज जूझ रहा है। आतंकवाद निरोधी दस्ते की इस कार्रवाई को निश्चित रूप से एक बड़ी सफलता माना जाना चाहिये। समय रहते आतंकियों की गिरफ्तारी से सम्भावित खतरे को टाल दिया गया है। यह दर्शाता है कि हमारी सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हैं और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से आतंकवादी गतिविधियों पर नजर बनाए हुए हैं। खुफिया तंत्र की सक्रियता और समन्वय इस सफलता के प्रमुख कारण हैं। यह केवल कानून–व्यवस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, शैक्षिक और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ मुद्दा भी है। डिजिटल युग में आतंकवाद का स्वरूप भी बदल गया है। अब यह केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से विचारधाराओं का प्रसार तेजी से होता है। कट्टरपंथी संगठन युवाओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिये प्रभावित करते हैं, उन्हें झूठे वादों और भावनात्मक अपीलों के जरिये अपने जाल में फंसाते हैं। ऐसे में साइबर निगरानी और डिजिटल साक्षरता दोनों ही बेहद आवश्यक हो जाते हैं। इस मामले का चिन्ताजनक पहलू यह भी है कि अब आतंकवादी लोभ–लालच देकर हिन्दू युवकों को भी अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। सरकार और सुरक्षा एजेंसियों के साथ–साथ समाज की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। लखनऊ में हुई यह गिरफ्तारी हमें सतर्क रहने का सन्देश देती है। यह केवल सुरक्षा एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम जागरूकता बनाये रखें। आतंकवाद के खिलाफ लड़ायी केवल हथियारों से नहीं, बल्कि विचारों, शिक्षा और सामाजिक एकजुटता से भी लड़ी जाती है।

हालाँकि, इस घटना का दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रश्न फिर वहीं घूम फिर कर आ जाता है कि हिन्दुओं को मिटाने का षड्यंत्र कब तक चलेगा ? कौन हैं यह आतंकवादी ? क्या रिश्ता है इनका इस माटी से ? ढेर सारे प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं। जब तक हम रोग को नहीं जानेंगे तो उसका उपचार भी नहीं कर पायेंगे। वैसा ही आतंकवाद के सम्बन्ध में भी है। जब हम आतंकवाद को जानेंगे ही नहीं तो उसका मुकाबला भी नहीं कर पायेंगे। यह कैसी विडम्बना है कि हम अपने ही पवित्र धर्म स्थलों और देवी–देवताओं के दर्शन सैन्य बलों की सुरक्षा में करने पर विवश हैं। इस देश का एक वर्ग ऐसा भी है जो आतंकवाद के साथ इस्लाम शब्द जोड़े जाने पर विरोध करता है और इस्लाम को बदनाम करने की साजिश बताता है पर क्या उन्हें मालूम नहीं कि केवल भारत ही नहीं पूरी दुनिया में इस्लाम और अल्लाह के नाम पर हो रहे नरसंहारों की संख्या बढ़ती जा रही है ? क्यों आये दिन निर्दोष हिन्दुओं की हत्या होती है ? क्यों अफगानिस्तान से हिन्दुओं का सफाया हो गया ? क्यों बांग्लादेश में हिन्दुओं को मिटाने का अन्तिम चरण चल रहा है ? क्यों कश्मीर घाटी से हिन्दू पूरी तरह साफ हो गये? क्यों रूस के मुस्लिम बहुल क्षेत्र उससे अलग हो गये ? क्यों दुनिया भर के मुसलमान इजराइल का नामो निशान मिटाना चाहते हैं ? क्यों कोई भी मुस्लिम देश पंथनिरपेक्ष नहीं है ? इसका सीधा सा उत्तर है इस्लाम की विचारधारा, जिसमें किसी दूसरे धर्म का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। जो लोग मुसलमानों के साथ सह अस्तित्व की बात करते हैं, वे दूसरी दुनिया में जी रहे हैं। इसलिये इस विचारधारा को जब तक मिटाया नहीं जायेगा, विश्व से आतंकवाद समाप्त नहीं होगा।। ●

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 08

RNI. No. UPHIN/2015/65982

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ दूरभाष +91- 6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

अनुक्रम

बिनु पानी सब सून.... 04

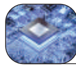
सेमीकण्डक्टर में आत्मनिर्भर बनता भारत 07

माता सीता की संकल्पशीलता, दायित्व बोध... 08

चीन में रामायण की बढ़ती लोकप्रियता 10

उत्तर प्रदेश के लोक नृत्य 11

परम्परा, परिवर्तन और 'नवीन भारत' का उदय 13

आतंकियों के निशाने पर उत्तर प्रदेश 14

कम लागत में अधिक आय व स्वस्थ पशुओं... 15

पौधशालाओं के लिए वरदान होंगी ... 16

सुभाषित

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे-गजे।
साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने-वने॥

न हर पर्वत पर मणि-मणिक्य ही प्राप्त होते हैं, न प्रत्येक हाथी के मस्तक में मुक्ता मणि प्राप्त होती है। संसार में मनुष्यों की कमी न होने पर भी साधु पुरुष नहीं मिलते। इसी प्रकार सभी वनों में चन्दन के वृक्ष नहीं मिलते है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या	: 02510210002360
आई एफएससी	: UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ	

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

● डॉ. वेंकटेश दत्ता

बिनु पानी सब सून....

मौसम विभाग ने इस बार के मानसून में औसत से कम बरसात की भविष्यवाणी कर चिन्ता बढ़ा दी है। यदि ऐसा हुआ तो जल संकट और गहरा सकता है। हमारी संस्कृति में जल जीवन का आधार माना गया है। जीवन के उद्भव और विकास का आधार होने के कारण जल को सहेजने की परम्परा रही है। वेदों में जल को प्राण तत्व मानते हुए इसकी स्तुति की गयी है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में जल की शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है। अथर्व वेद में जल की पवित्रता के लिये पृथ्वी से प्रार्थना की गयी है और इसे मलिन करने वालों को दण्डित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी है। पानी जीवन और भविष्य का आधार है। पृथ्वी पर केवल 0.5 प्रतिशत पानी ही उपयोग के योग्य है, इसलिये इसका संरक्षण अनिवार्य है। बढ़ते जल संकट को देखते हुए, हर बूँद बचाना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है, अन्यथा आने वाली पीढ़ियों के लिये पानी खत्म हो जायेगा। जल, आर्थिक विकास, खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिक सन्तुलन का आधार है।

भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश, जल संसाधनों की दृष्टि से- गंगा, यमुना, घाघरा, गोमती जैसी नदियाँ, व्यापक भूजल भण्डार, और विशाल सिंचाई तंत्र से समृद्ध प्रतीत होता है। किन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है। गंगा बेसिन का हिस्सा होने के बावजूद, राज्य की नदियाँ और भूजल तंत्र गम्भीर दबाव में हैं।

पिछले तीन दशकों में कृषि विस्तार, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने जल उपयोग के स्वरूप को बदल दिया है। विशेष रूप से, छोटी नदियों और सहायक जलधाराओं की उपेक्षा ने बड़े नदी तंत्रों के स्वास्थ्य को भी प्रभावित किया है। राज्य आज जल प्रबन्धन के गम्भीर संकट का सामना कर रहा है, जो कृषि, सिंचाई, उद्योग, और शहरीकरण से गहरायी से जुड़ा हुआ है।

अनियोजित दोहन

उत्तर प्रदेश का भौगोलिक विस्तार गंगा-यमुना के दोआब से लेकर तरायी क्षेत्र तक फैला हुआ है, जहाँ सतही और भूजल संसाधनों की प्रचुरता रही है। फिर भी, अनियोजित दोहन और प्रबन्धन की कमी के कारण जल संकट उभर कर सामने आया है। राज्य में सिंचाई के लिये जल की माँग अत्यधिक है, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने जल उपयोग के पैटर्न को बदला है और जलवायु परिवर्तन ने वर्षा की अनिश्चितता को बढ़ाया है। यदि समय रहते एक सुदृढ़ और वैज्ञानिक जल प्रबन्धन व्यवस्था विकसित नहीं की गयी, तो यह संकट सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता में परिवर्तित हो सकता है। प्रदेश में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने जल माँग को तेजी से बढ़ाया है। उद्योगों- विशेषकर चीनी मिलें, वस्त्र उद्योग, और ऊर्जा क्षेत्र में जल का भारी उपयोग होता है। अपर्याप्त जल पुनर्चक्रण, प्रदूषण और जल आवंटन में प्रतिस्पर्धा से कृषि, उद्योग घरेलू उपयोग के बीच संघर्ष बढ़ रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भी औद्योगिक जल माँग तेजी से बढ़ रही है, और भविष्य में यह जल संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव डालेगी।

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन ने जल प्रबन्धन को और जटिल बना दिया है। वर्षा का वितरण अत्यन्त असमान और अनिश्चित होता जा रहा है। कुछ क्षेत्रों में बाढ़, तो कुछ में सूखा, मानसून की समय-सीमा में परिवर्तन और अत्यधिक वर्षा की घटनाओं में वृद्धि रही है। इस प्रकार की हाइड्रोलॉजिकल अनिश्चितता जल संसाधनों की योजना और प्रबन्धन को कठिन बनाती है।

भूजल पर अत्यधिक दबाव

उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, और कृषि क्षेत्र जल का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। अनुमानतः राज्य में निकाले गये कुल जल का लगभग 90 प्रतिशत सिंचाई में उपयोग होता है। विशेष रूप से धान, गेहूँ और गन्ना जैसी जल-गहन फसलों की खेती ने भूजल पर अत्यधिक दबाव डाला है। राज्य में 2023 के आसपास लगभग 46 अरब घन मीटर भूजल निकाला गया, जो पुनर्भरण की दर से कहीं अधिक है । कई क्षेत्रों में जलस्तर 30 फीट से गिरकर 200 फीट से भी नीचे चला गया है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार, राज्य के कई ब्लॉक "अतिदोहन" श्रेणी में आ चुके हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गन्ना उत्पादन के कारण जलस्तर

में तीव्र गिरावट दर्ज की गयी है। भूजल का यह अनियंत्रित दोहन "ट्रैजेडी ऑफ कॉमन्स" का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ व्यक्तिगत लाभ सामूहिक संसाधन को क्षति पहुँचाता है। यह स्थिति न केवल किसानों की लागत बढ़ाती है, बल्कि भविष्य की जल सुरक्षा को भी खतरे में डालती है। इसके अतिरिक्त, फसल विविधीकरण की कमी और न्यूनतम समर्थन मूल्य नीतियों ने जल-गहन फसलों को बढ़ावा दिया है, जिससे जल संकट और गहराता गया है।

प्रदेश में नहरों, ट्यूबवेलों और पम्पसेटों का व्यापक नेटवर्क है, लेकिन इसकी दक्षता सीमित है। प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

असमान जल वितरण : नहरों के हेड (ऊपरी) क्षेत्रों में अधिक जल उपलब्ध होता है, जबकि टेल (निचले) क्षेत्रों में कमी रहती है।

पुरानी अवसंरचना : कई सिंचाई परियोजनाएँ दशकों पुरानी हैं, जिनका रखरखाव अपर्याप्त है।

भूजल पर अत्यधिक निर्भरता : लाखों ट्यूबवेल हर वर्ष बहुत बड़ी मात्रा में जल निकालते हैं।

कम दक्षता : पारम्परिक बाढ़ सिंचाई पद्धतियों में जल का बड़ा हिस्सा व्यर्थ चला जाता है। इसके विपरीत, ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का उपयोग बहुत सीमित है। भारत में कुल सिंचित क्षेत्र का केवल लगभग 12 प्रतिशत ही इनके अन्तर्गत आता है।

जल प्रबन्धन केवल आपूर्ति और माँग का विषय नहीं है, बल्कि पारिस्थितिकी से भी जुड़ा हुआ है। जलभराव और लवणीयता, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा, आधारभूमियों का लोप, भूजल पुनर्भरण में कमी से न केवल कृषि उत्पादकता प्रभावित होती है, बल्कि जैव विविधता और पारिस्थितिक सन्तुलन भी बिगड़ता है। कई औद्योगिक इकाइयाँ अपशिष्ट जल उपचार मानकों का पालन नहीं करतीं। नदियों में प्रदूषकों की मात्रा बढ़ रही है, जिससे जल गुणवत्ता प्रभावित होती है।

सुरक्षित जल प्रबन्धन के लिये जरूरी पहल

उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत के सबसे बड़े राज्य की जनसंख्या के लिये सुरक्षित उपचारित जल पुनः उपयोग नीति, 2026 को मंजूरी दे दी है। कृषि, उद्योग, निर्माण और शहरी लैण्डस्केपिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उपचारित जल के पुनः उपयोग को बढ़ावा देकर, राज्य का उद्देश्य ताजे पानी के स्रोतों पर निर्भरता को काफी हद तक कम करना और भूजल के अत्यधिक दोहन पर अंकुश लगाना है। यह देश की सतत और सुदृढ़ जल प्रबन्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। पहले चरण में, ट्रीट किये गये पानी का इस्तेमाल शहरी स्थानीय निकायों, निर्माण कार्यों, बागवानी और सिंचाई के लिये किया जायेगा। दूसरे चरण में, इसका दायरा बढ़ाकर उद्योगों, कृषि और रेलवे तक किया जायेगा। तीसरे चरण में, एक दोहरी-पाइप प्रणाली लागू की जायेगी ताकि घरों में पीने के अलावा अन्य कामों के लिये इस्तेमाल होने वाले पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

2045 तक पुनः उपयोग का लक्ष्य

यह नीति निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश में पीने के अलावा अन्य कामों के लिये इस्तेमाल होने वाले शोधित पानी के दोबारा इस्तेमाल के लिये नयी तकनीकों, बाजारों और प्रणालियों के द्वार खोलेगी। इससे ताज़े पानी के स्रोतों पर निर्भरता भी कम होगी। यह नीति पाँच चरणों में एक स्पष्ट और महत्वाकांक्षी रूपरेखा प्रस्तुत करती है। पहले चरण में, 2030 तक, इसका लक्ष्य उन स्थानों पर उपचारित अपशिष्ट जल का 50 प्रतिशत सुरक्षित पुनःउपयोग करना है, जहाँ सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट चल रहे हैं और जहाँ जल संग्रह तथा उपचार की क्षमता पहले से मौजूद है। दूसरे चरण में, इन्हीं स्थानों पर 100 प्रतिशत सुरक्षित पुनः उपयोग का लक्ष्य प्राप्त किया जायेगा। तीसरे चरण में, 2030 तक, यह उन स्थानों पर उपचारित अपशिष्ट जल का 30 प्रतिशत सुरक्षित पुनः उपयोग करने का प्रस्ताव करती है, जहाँ एसटीपी मौजूद नहीं हैं या चालू अवस्था में नहीं हैं। चौथे और पाँचवें चरण में, यह नीति इन्हीं स्थानों पर क्रमशः 2035 तक 50 प्रतिशत और 2045 तक 100 प्रतिशत पुनः उपयोग का लक्ष्य निर्धारित करती है।

खास बात यह है कि यह पॉलिसी

पारम्परिक 'ट्रीट-एण्ड-डिस्पोज़' तरीकों से एक सर्कुलर इकॉनमी की ओर एक बड़ा बदलाव दिखाती है, जहाँ गन्दे पानी को एक कीमती संसाधन माना जाता है। इस तरीके से न सिर्फ पानी की सुरक्षा बढ़ने की उम्मीद है, बल्कि लम्बे समय तक सतत विकास और आर्थिक उन्नति में भी मदद मिलने की उम्मीद है।

पानी के पुनः उपयोग की योजना

इस नीति की एक खास बात यह है कि यह 'सिटी-लेवल रीयूज़ एक्शन प्लान' के जरिये विकेन्द्रीकृत और शहर-स्तरीय योजना पर जोर देती है। इन योजनाओं को शहरी स्थानीय निकायों को रीयूज़ के मौकों की पहचान करने, माँग का पता लगाने और ट्रीट किये गये गन्दे पानी का सही इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिये जरूरी आधारभूत ढाँचा तैयार करने में मदद करने के लिये बनाया गया है।

प्रदूषण होगा कम

पुनः उपयोग की रणनीतियों को जमीनी स्तर पर लागू किया जा सकता है। इसके लिये क्षेत्र-विशेष के पुनः उपयोग की पहचान करके और व्यवस्थित विस्तार कर शोधित जल को माँगकर्ता तक पहुँचाया जा सकता है। यह नीति नदियों के पुनरुद्धार और प्रदूषण कम करने से जुड़ी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के भी पूरी तरह अनुरूप है। दोबारा इस्तेमाल को बढ़ावा देकर और बिना ट्रीट किये हुए गन्दे पानी के बहाव को कम करके, यह नदियों में प्रदूषण का बोझ घटाने में योगदान देगी

पानी का दोबारा उपयोग आवश्यक

हमारे पानी के भण्डार सीमित हैं। ताजे पानी के संसाधनों पर हर दिन दबाव बढ़ता जा रहा है, जिसका मुख्य कारण तेजी से बढ़ता शहरीकरण और ज़मीन के नीचे से पानी का बहुत अधिक इस्तेमाल है। जलवायु परिवर्तन भी पानी की उपलब्धता के लिये खतरा बन रहा है, जिससे हमारे शहर पानी की कमी को आने वाले समय में और भी जूझेंगे। अगर हम ताजे पानी को बचाना चाहते हैं, तो साफ़ किये गये पानी का दोबारा इस्तेमाल करना बेहद ज़रूरी है। शोधित जल या इस्तेमाल किया हुआ पानी, पानी का ही एक दूसरा रूप है और सर्कुलर इकॉनमी को बढ़ावा देने के लिये इसे जल चक्र का ही एक हिस्सा माना जाना चाहिये। हमारे सीवेज को साफ़ करने में बहुत ज्यादा पैसा खर्च होता है– पीने के पानी के लिये इस्तेमाल होने वाले कच्चे पानी को साफ़ करने में लगने वाले खर्च से दो से तीन गुना ज्यादा। सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट को पूरे शहर में बने कई पम्पिंग स्टेशनों के द्वारा सीवेज मिलता है और उन्हें दिन-रात अपनी पूरी क्षमता से काम करना होता है। साफ़ किया गया पानी, अगर तय मानकों के मुताबिक हो, उसे उद्योगों, निर्माण कार्यों और इकोसिस्टम के लिये सुरक्षित रूप से दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे सीमित ताजे पानी पर पड़ने वाला बोझ कम हो जाता है। साफ किये गये पानी का इस्तेमाल सिंचाई के लिये भी किया जा सकता है, जिसमें मछली पालन भी शामिल है।

और 'नमामि गंगे' जैसे कार्यक्रमों के तहत चल रहे प्रयासों को मजबूत करेगी। उत्तर प्रदेश में जल संकट एक जटिल, बहुआयामी समस्या है, जिसका समाधान केवल तकनीकी उपायों से सम्भव नहीं है। इसके लिये एक समग्र, सहभागी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है। यदि प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप किये जाएँ, तो राज्य सतत जल प्रबन्धन की दिशा में अग्रसर हो सकता है। कृषि, उद्योग और शहरीकरण के बीच सन्तुलन स्थापित करते हुए, जल को एक "साझा और सीमित संसाधन" के रूप में देखना होगा। एकीकृत, विज्ञान-आधारित और सहभागी जल प्रबन्धन प्रणाली से न केवल जल संकट को कम किया जा सकता है, बल्कि सतत विकास के मार्ग पर भी आगे बढ़ा जा सकता है। अन्यथा, जल की कमी भविष्य में खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता तीनों के लिये गम्भीर खतरा बन सकती है। ●

यूपी का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट एसजीपीजीआई के नाम

लखनऊ। संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआई) ने प्रदेश का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट कर इतिहास रच दिया। ट्रांसप्लांट करने वाली टीम में शामिल प्रो. एसके अग्रवाल ने बताया कि सर्जरी सफल रही है। उम्मीद है कि मरीज को हफ्तेभर में डिस्चार्ज कर दिया जायेगा।

एसजीपीजीआई ने पिछले साल ही हार्ट ट्रांसप्लांट के लिये जरूरी सुविधाएँ जुटा ली थीं। तीन मरीज भी सम्पर्क में थे, लेकिन डोनर का इन्तजार था। प्रो. अग्रवाल ने बताया कि दिल्ली में एक व्यक्ति को ब्रेन डेड घोषित किये जाने के बाद उसके परिवारीजनों ने अंगदान का फैसला किया। इसके बाद सीतापुर निवासी 41 वर्षीय महिला मरीज को तुरन्त एडमिट कर जरूरी तैयारियाँ की गयी। दिल्ली से एयर एम्बुलेंस के जरिये डोनर हार्ट को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर संस्थान तक लाया गया और सर्जरी की गयी।

एसजीपीजीआई के निदेशक प्रो. आर.के. धीमन ने कहा कि यह नयी शुरुआत है। अब हृदय प्रत्यारोपण के लिये मरीजों को प्रदेश के बाहर नहीं जाना पड़ेगा। राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक समेत कई नेताओं ने एसजीपीजीआई को बधायी दी है। योगी ने इसे बड़ा कदम बताते हुए कहा कि सरकार भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों को पूरा समर्थन देती रहेगी।

दिल्ली से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर संस्थान तक लाया गया डोनर हार्ट, डॉक्टरों का दावा है 05 घण्टे तक चली सर्जरी सफल रही।

● चन्द्रमोहन अग्रवाल

सेमीकण्डक्टर में आत्मनिर्भर बनता भारत

सेमीकण्डक्टर चिप्स को लेकर पूरे विश्व में बहुत शोर मचाया जा रहा था और ऐसा समझा जाता था कि ताइवान, चीन, साउथ कोरिया, जापान और अमेरिका के अलावा दुनिया का कोई भी अन्य देश इस टेक्नोलॉजी में महारत हासिल नहीं कर पाया। पर लोग शायद भारत को भूल गये थे या फिर भारत को दुनिया ने अण्डरस्टीमेट (कम आँकना, कम समझना) किया था क्योंकि दुनिया की चिप मैन्युफैक्चरिंग में उसके डिजाइनिंग करने में एक चौथाई हाथ सिर्फ भारतीयों का ही था। हमारे ही दिमाग का इस्तेमाल कर ये देश दुनिया भर को लूट रहे थे।

फिर आयी मोदी जी की पीएलआई स्कीम और दुनिया भर के देशों को लगा कि जब सेमीकण्डक्टर की डिजाइनिंग भारत में होती है तो क्यों न इसे भारत में ही बनाया जाये और दुनिया की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ अपने संयंत्र स्थापित करने के लिये भारत में आ गयीं। भारत ने अपने पहले स्वदेशी सेमीकण्डक्टर चिप्स को सफलतापूर्वक डिज़ाइन भी किया और बनाया भी, जिसमें सबसे खास है 'विक्रम' 32-बिट प्रोसेसर, जिसे आधिकारिक तौर पर सितम्बर 2025 में पेश किया गया था। वैसे तो भारत ऐतिहासिक रूप से चिप डिज़ाइन में दुनिया का लीडर रहा है, लेकिन अब यह इण्डिया सेमीकण्डक्टर मिशन (ISM) के जरिये बड़े पैमाने पर मैन्युफैक्चरिंग और असेम्बली में बदल रहा है।

मौजूदा मैन्युफैक्चरिंग लैण्डस्कोप

भारत अभी ओएसएटी (आउटसोर्स्ड सेमीकण्डक्टर असेम्बली और टेस्ट) और एटीएमपी (असेम्बली, टेस्टिंग, मार्किंग और पैकेजिंग) फैसिलिटी पर फोकस कर रहा है, जो एक पूरी वैल्यू चेन बनाने की दिशा में पहला कदम है। जो भारतीय वैज्ञानिक पहले दुनिया के लिये काम कर रहे थे अब वह भारत के लिये काम कर रहे हैं और यह बदलाव लाने वाले और कोई नहीं बल्कि हमारे प्यार मोदी जी हैं। ●

'मेड इन इण्डिया' चिप्स की खास उपलब्धियाँ

विक्रम 32-बिट प्रोसेसर : मोहाली में ISRO की सेमीकण्डक्टर लेबोरेटरी (SCL) द्वारा विकसित, यह भारत का पहला पूरी तरह से स्वदेशी 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर है। यह स्पेस मिशन और रॉकेट लॉन्च जैसे मुश्किल माहौल के लिये खास तौर पर बनाया गया है।

कमर्शियल प्रोडक्शन : गुजरात के साणंद में केनेस सेमीकॉन प्लांट हाल ही में मार्च 2026 से कमर्शियल प्रोडक्शन शुरू करने वाली दूसरी ऑपरेशनल यूनिट बन गयी है।

पहली मेमोरी चिप्स : माइक्रोन टेक्नोलॉजी ने भारत के पहले देश में बने मेमोरी मॉड्यूल बनाने के लिये गुजरात के साणंद में एक असेम्बली और टेस्टिंग फैसिलिटी भी शुरू की है।

एडवांस्ड डिज़ाइन : 2026 की शुरुआत में, क्वालकॉम ने 2nm सेमीकण्डक्टर चिप डिज़ाइन लॉन्च किया, जहाँ ज़्यादातर इंजीनियरिंग का काम बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद में भारतीय टीमों ने किया।

काशी विश्वनाथ मन्दिर के चौक में वैदिक घड़ी लगाई गयी

वाराणसी। काशी विश्वनाथ धाम में 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' इन दिनों खास चर्चा में है। करीब 700 किलो वजनी यह घड़ी परम्परा और आधुनिक तकनीक का अनोखा संगम है। इसे डॉ. मोहन यादव ने भेंट किया, जिसे योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में एक समारोह के दौरान स्थापित किया गया। मन्दिर के सीईओ विश्वभूषण मिश्रा के अनुसार, यह पहल श्रद्धालुओं को वैदिक ज्ञान और सनातन परम्पराओं से जोड़ने में मदद करेगी। यह घड़ी सामान्य 24 घण्टे की प्रणाली से अलग है। इसमें दिन की शुरुआत आधी रात से नहीं, बल्कि सूर्योदय से होती है और अगले सूर्योदय तक चलती है। पूरे दिन को 30 'मुहूर्तों' में बाँटा गया है, जिनमें हर मुहूर्त लगभग 48 मिनट का होता है। सूर्यास्त आमतौर पर 15वें मुहूर्त के आसपास होता है।

इस घड़ी की खासियत यह है कि यह सिर्फ समय ही नहीं बताती, बल्कि 'तिथि', 'नक्षत्र', ग्रहों की स्थिति, त्योहार, ग्रहण और चन्द्रमा की कलाओं जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी देती है। यह स्थानीय माध्य समय (LMT) भी दिखाती है, जो सूर्य की स्थिति के आधार पर तय होता है, इसलिये किसी स्थान के लिए अधिक सटीक माना जाता है। इसके अलावा, यह IST और GMT दोनों समय भी दिखाती है। विशेषज्ञों के अनुसार, वैदिक समय गणना पर आधारित कुछ भविष्यवाणियाँ आधुनिक तरीकों से 20 से 23 प्रतिशत तक अधिक सटीक पायी गयी हैं। इस घड़ी का उद्देश्य प्राचीन भारतीय कालगणना प्रणाली को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर फिर से जीवन्त करना है।

माता सीता की संकल्पशीलता, दायित्व बोध और मर्यादा का पालन आज भी प्रासंगिक

माता सीता के जीवन और उनके जीवन में घटी घटनाओं को हजारों वर्ष बीत गये हैं। लेकिन स्मृति में वे आज भी जीवन्त हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन त्याग, तपस्यामय, संकल्पशीलता, दायित्वबोध, कुटुम्ब समन्वय, पर्यावरण संरक्षण, संस्कारित सन्तान का निर्माण, सतत ज्ञानार्जन, श्रमशीलता के साथ समय एवं परिस्थिति के अनुरूप उचित निर्णय लेने का अद्भुत सन्देश है जो आज भी प्रासंगिक है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' को यदि 'सीतायण' कहा जाये तो अनुचित न होगा। इस ग्रन्थ में सर्वाधिक विस्तार सीता जी के व्यापक व्यक्तित्व पर ही है। ऐसी विलक्षण व्यक्तित्व की धनी माता सीता का अवतरण वैशाख माह शुक्ल पक्ष की नवमी को हुआ था जो इस वर्ष 24 अप्रैल को मनायी जायेगी।

भारतीय वाङ्मय में रामायण काल के घटनाक्रम पर सर्वाधिक ग्रन्थों की रचना हर कालखण्ड में और हर भाषा में हुई है। सभी रचनाकारों ने माता सीता के व्यक्तित्व को मर्यादा पालन, कर्त्तव्यनिष्ठता, श्रम और ज्ञान की साधना के साथ त्यागमयी जीवनशैली की पराकाष्ठा माना है। पौराणिक सन्दर्भ में उन्हें माता लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। यदि इस अवधारणा को हटा दिया जाय तब भी उनके सांसारिक जीवन की शैली उच्चता की पराकाष्ठा है जो उन्हें पूज्य स्थान पर प्रतिष्ठित करती है। बाबा तुलसी रामचरितमानस रचित मंगलाचरण में विभिन्न देवों की वन्दना के साथ आरम्भ की है। मंगलाचरण का पाँचवाँ श्लोक माता सीता की वन्दना के लिये है-

उद्भवस्थित संहारकारिणी क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करी सीतां नतोऽम् रामवल्लभात्।।

अर्थात् उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार करने वाली, समस्त क्लेश दूर करने वाली और सब प्रकार से श्रेष्ठ कार्य करने वाली भगवान श्रीराम की प्रिय माता सीता को मैं नमन् करता हूँ।

इस श्लोक में प्रयोग किये शब्दों में माता सीता का सम्पूर्ण विराट व्यक्तित्व समाया है। श्लोक की उपमाएँ उनके लौकिक और अलौकिक दोनों स्वरूप का संकेत करती है। उनके अलौकिक स्वरूप को बाबा तुलसी ने बालकाण्ड में सत्रहवें दोहे के बाद चौथी चौपाई में और स्पष्ट किया है -

'जनकसुता जगजननि जानकी.....
जासु कृपा निरमल मति पावउँ।'

प्रत्येक नारी की मार्गदर्शक

यदि हम माता सीता के जीवन की घटनाओं को गहनता से समझे तो वे हर युग में प्रत्येक नारी की मार्गदर्शक हैं, बल और बुद्धि की निधान हैं। उन्होंने बालपन में शारीरिक साधना के साथ धनुष बाण चलाने का अभ्यास भी किया होगा। तभी तो महर्षि वाल्मीकि आश्रम में अपने पुत्र लव और कुश को धनुष बाण चलाने की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने ही दी थी। उनमें शारीरिक बल और सामर्थ्य इतना था कि जिस शिव धनुष को बलवान से बलवान राजा नहीं उठा पाये उन्होंने उसे सहजता से उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रख दिया था।

दृढ़ इच्छाशक्ति

आत्मबल इतना कि बलशाली रावण के सामने भी नहीं घबरायी। रावण ने उनका छल पूर्वक अपहरण किया था। असुर शक्तियों के बीच लंका में उन्होंने बहुत अधिक समय बिताया। इस दौरान उन्हें रामजी से बिछड़ने की वेदना तो थी किन्तु मन में भय का भाव कभी नहीं आया। रावण की धमकियों और मारने के लिये तलवार निकालने के बाद भी वे किंचित भयभीत नहीं हुईं। यह शक्ति की साधना के बिना सम्भव नहीं था।

विपरीत परिस्थिति में धैर्य

विपरीत परिस्थिति में भी सामान्य रहना और परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालने का उनमें अद्भुत कौशल था। परिस्थिति के अनुरूप ही उनकी दिनचर्या रही। जो ज्ञान की साधना और उनकी उच्चतम मानसिक बौद्धिक क्षमता का सन्देश है।

उनकी जीवन शैली में यह स्पष्ट भी है कि जीवन के हर मोड़ पर उन्होंने ज्ञानार्जन का अभ्यास कभी न छोड़ा। पिता राजा जनक के यहाँ आने वाले ऋषियों और विद्वानों का माता सीता स्वयं सत्कार करतीं थीं और ज्ञानोपदेश भी सुनती थीं। वनवास काल में रामजी अनेक ऋषियों के आश्रम गये। प्रत्येक ऋषि सत्संग में माता सीता उनके साथ रहीं। ऋषियों के प्रवचन के साथ ही सीता जी ऋषि माताओं से सत्संग भी करती थीं। रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में देवी अनुसुइया से उनका संवाद इसका उदाहरण है।

परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। वे राजकुमारी थीं और राजरानी थीं लेकिन वनवास काल में सहज जीवनचर्या, स्वयं भोजन बनाना, वनवासियों के बीच घुल-मिलकर रहने का जैसा उदाहरण माता सीता ने प्रस्तुत किया है। ऐसा किसी पौराणिक चरित्र में नहीं मिलता। अयोध्या त्यागने के बाद महर्षि वाल्मीकि आश्रम में वे वर्षों तक रहीं लेकिन किसी को आभास तक न हुआ कि वे जनक कुमारी और अयोध्या साम्राज्य की राजरानी हैं। गौसेवा, जंगल में लकड़ी बीनना और स्वयं अपना भोजन तैयार करना इनकी दिनचर्या थी। संध्याकाल के प्रवचनों में भी नियमित रहतीं थीं। अपने वनवास काल में वे जिस प्रकार समूची वनवासी स्त्रियों के साथ और वाल्मीकि आश्रम में सभी से घुलमिल कर रहतीं थीं यह सामाजिक समरसता का उदाहरण है। सन्तान होने के बाद अपने दोनों पुत्रों को भी प्रवचन में बैठातीं थीं।

सन्तान को संस्कार

सन्तान को संस्कार देने के लिये प्रवचन, शास्त्र का ज्ञान, सत्संग आवश्यक होते हैं और साहसी बनाने के लिये शस्त्र शिक्षा आवश्यक होती है इसीलिये माता सीता ने पहले दोनों पुत्रों को धनुष-बाण चलाना स्वयं सिखाया फिर महर्षि वाल्मीकि के पास भेजा। शास्त्र और शस्त्र साधना के साथ सन्तान में श्रमशीलता भी होनी चाहिये इसलिये वे जंगल में लकड़ी एकत्र करने के लिये दोनों पुत्रों को अपने साथ लेकर जातीं थीं। जहाँ वो पुत्रों से लकड़ी बीनने में सहायता माँगती थी किन्तु हरे-भरे पेड़ों में जीवन होता है इसलिये उन्हें नहीं काटना चाहिये। यह सीख देती थीं। रास्ते में बातचीत के दौरान छोटे-छोटे वन्यजीवों को देखकर उनकी सुरक्षा का भी ध्यान रखने की शिक्षा पुत्रों को देतीं थीं। इस प्रकार माता सीता अपनी सन्तानों को संस्कार, साहस और श्रमशीलता का गुण डालने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण का भी सन्देश देती थीं।

समन्वय

माता सीता की कार्यशैली समूचे कुटुम्ब के साथ समन्वय बनाकर चलने की रही है। अपनी इस विशेषता के कारण ही वे जनकपुरी में भी पूरे परिवार का केन्द्र रहीं और अयोध्या में भी सबकी

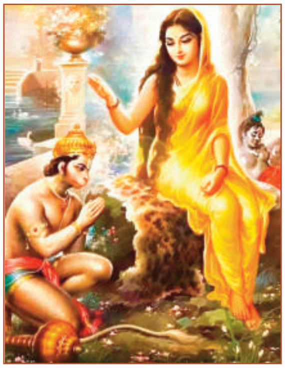

प्रिय। अयोध्या के सम्पूर्ण परिवार में समन्वय बनाकर चलने का भी उन्होने आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। पिता महाराज जनक का परिवार एक बड़े कुटुम्ब का स्वरूप था। माता सीता इस परिवार की ज्येष्ठ सन्तान थीं। उन्होंने जनकपुरी में अपनी सभी छोटी बहनों सदैव स्नेह दिया। चार बहनों में सबसे बड़ी सीता जी की तीनों छोटी बहनें उनकी देवरानियाँ बनकर अयोध्या आयीं। माता कैकेयी के कारण उन्हें वन जाना पड़ा था लेकिन उन्होंने माता कैकयी से कभी दुराव नहीं किया। सदैव आदर और सम्मान का व्यवहार किया। वनवास काल में अयोध्या का पूरा परिवार चित्रकूट आया तब भी माता सीता ने माता कैकेयी को उतना ही सम्मान किया जितना पहले करतीं थीं।

पति के प्रति दायित्वबोध

माता सीता के व्यक्तित्व में पति के प्रति भी दायित्ववोध और कर्त्तव्य पालन की स्पष्ट झलक है। वनवास सिर्फ प्रभु राम के लिये था किन्तु सीता जी ने अयोध्या या अपने मायके जनकपुरी न जाकर पति राम के साथ ही वन जाने का निर्णय लिया। पति जिस परिस्थिति में भी हो अर्धांगिनी के रूप में पत्नी को भी रहना चाहिये। वन जाकर माता सीता ने पतिव्रता धर्म का उदाहरण प्रस्तुत किया।

आज देश में जो परिस्थितियाँ हैं। वे साधारण नहीं हैं। परिवार टूट रहे हैं, कुटुम्ब बिखर रहे हैं, सन्तान में संस्कार घट रहे हैं, पर्यावरण का निरन्तर ह्रास हो रहा है और कूटरचित विमर्श तैयार करके सामाजिक विद्वेष पैदा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में माता सीता का अवतरण दिवस सिर्फ उत्सव के रूप में न मनाकर उनके आदर्श, परिवार एवं समाज निर्माण के साथ पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता के संकल्प को आत्मसात भी करना चाहिये।

राजस्थान के तीन गाँवों में 26 हजार लोग आज भी बोल रहे संस्कृत

राजस्थान के अजमेर, बूँदी और बाँसवाड़ा जिलों के सावर, कापरेन और गणोड़ा गाँव आज अपनी खास पहचान बना चुके हैं। यहाँ करीब 26 हजार लोग रोजमर्रा की जिन्दगी में संस्कृत बोलते हैं। करीब 8 हजार आबादी वाले सावर गाँव में लगभग 4800 लोग संस्कृत में बातचीत करते हैं।

इसी तरह बूँदी के कापरेन गाँव में करीब 14 हजार और बाँसवाड़ा के गणोड़ा गाँव के लगभग 7 हजार लोग संस्कृत बोलते हैं। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इसे सहजता से बोलते हैं। हालाँकि बदलाव अचानक नहीं आया, बल्कि 1996 से संस्कृत भारती संस्था के लगातार प्रयासों का परिणाम है।

ट्रेनिंग कैम्प से शुरू हुआ बदलाव

इस बदलाव की शुरुआत 1996 में संस्कृत भारती संस्था ने की। संस्था ने गाँवों में विशेष ट्रेनिंग कैम्प लगाये, जहाँ लोगों को आसान तरीके से संस्कृत सिखाई गई। इन कैंपों में बोलचाल पर ज्यादा ध्यान दिया गया, जिससे

लोग जल्दी भाषा सीख सकें। धीरे-धीरे गाँव के लोग आपस में संस्कृत में बात करने लगे।

बुजुर्गों तक सीखने का उत्साह

संस्कृत सिखाने के लिए अलग-अलग अवधि के शिविर लगाये गये, जिनमें 10 दिन से लेकर 15 दिन तक की कक्षाएँ होती थीं। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने इन शिविरों में भाग लिया।

शुरुआत में रोजमर्रा के शब्द सिखाये गये, फिर धीरे-धीरे वाक्य बनाना सिखाया गया। इससे लोगों में आत्मविश्वास बढ़ा और भाषा बोलना आसान हो गया।

हर घर में संस्कृत का माहौल

इन गाँवों की खास बात यह है कि यहाँ हर घर में कोई न कोई संस्कृत जानता है। गाँव की गलियों और बाजारों में भी लोग संस्कृत में बातचीत करते नजर आते हैं। यहाँ संस्कृत केवल पढ़ायी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों की रोजमर्रा की भाषा बन गयी है।

अन्य राज्यों में भी दिखा असर

राजस्थान के गाँवों की सफलता के बाद कर्नाटक और मध्य प्रदेश के कुछ गाँवों में भी संस्कृत को अपनाया। यह साबित होता है कि अगर सही दिशा और प्रयास मिले, तो कोई भी भाषा आम लोगों की भाषा बन सकती है।

भाषा से जुड़ी संस्कृति और पहचान

इन गाँवों में संस्कृत के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को भी बढ़ावा मिला है। यह पहल दिखाती है कि हमारी पुरानी भाषा आज भी जीवन्त रह सकती है और नयी पीढ़ी के बीच अपनी जगह बना सकती है।

चीन में रामायण की बढ़ती लोकप्रियता

बीजिंग। चीन की राजधानी बीजिंग से प्राप्त समाचार के अनुसार वहाँ पर हिन्दू धर्मग्रन्थ महकाव्य रामायण की लोकप्रियता बढ़ रही है। बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास में 28 मार्च 2026 को महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का मंचन एक विशेष अंदाज में किया गया। रामायण के इस मंचन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इस पूरी प्रस्तुति में सभी कलाकार चीनी नागरिक थे और नृत्य नाटिका का सम्पूर्ण मंचन व संवाद चीनी भाषा में ही सम्पन्न हुआ। लगभग दो घण्टे की यह प्रस्तुति दर्शकों को गहरी भावनाओं की यात्रा पर ले गयी। नृत्य नाटिका में भगवान राम के वनवास की पीड़ा, उनके धैर्य माँ सीता की दृढ़ता, हनुमान जी की भक्ति और भगवान राम की अयोध्या वापसी की खुशी, हर भाव को नृत्य, संगीत और अभिव्यक्ति के माध्यम से इतने सुन्दर ढंग से दिखाया गया कि भाषा की कोई दीवार महसूस ही नहीं हुई। इस अवसर पर चीन में भारत के राजदूत प्रदीप कुमार रावत ने कहा कि रामायण दुनिया के सबसे पुराने महाकाव्यों में से एक है। हजारों वर्ष पुरानी यह रचना आज भी लोगों को कर्तव्य, करुणा और साहस जैसे मूल्यों की सीख देती है। उन्होंने कहा कि रामायण का असर चीन तक दिखायी देता है। इस नृत्य नाटिका का निर्देशन व नेतृत्व चीनी नृत्यकार व भरतनाट्यम नृत्यांगना चिन शानशान ने किया। चिन शानशान ने एक साक्षात्कार में बताया कि इस प्रस्तुति को तैयार करने में लगभग चार महीने का समय लगा। इस प्रस्तुति की नींव जिस स्रोत पर टिकी थी वह था चीनी भाषा में रामायण का अनुवाद।

167.20 करोड़ रुपये में बिकी यशोदा व श्रीकृष्ण की पेंटिंग

नई दिल्ली। प्रख्यात भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा की आयल पेंटिंग यशोदा और श्रीकृष्ण मुम्बई में सैफ्रोन आर्ट की स्प्रिंग लाइव नीलामी में रिकार्ड 167.20 करोड़ रुपये में बिकी। इसके साथ ही यह आधुनिक भारतीय कला की अब तक की सबसे अधिक मूल्यवाली कृति बन गयी है। राजा रवि वर्मा की इस कृति को सीरम इंस्टीटयूट आफ इण्डिया के प्रबन्ध निदेशक डॉ. साइरस एस. पूनावाला ने खरीदा है। पूनावाला ने कहा मुझे प्रतिष्ठित पेंटिंग यशोदा और श्रीकृष्ण को खरीदने, संरक्षित करने और उसकी देखभाल करने का अवसर पाकर गर्व महसूस हो रहा है। 19वीं सदी के अन्तिम दशक में चित्रित इस कृति में भगवान कृष्ण और माता यशोदा का चित्रण है।

चार साल की सत्या भारती का अद्भुत कारनामा

प्रयागराज के नैनी इलाके के महेवा के रहने वाले देवेन्द्र भारती की 4 साल की बेटी सत्या भारती ने अपने चौथे जन्मदिन पर यमुना नदी को पार करने का कारनामा कर दिखाया है। इस नन्हीं परी ने 900 मीटर की दूरी ब्रेस्ट स्टाइल में स्विमिंग करते हुए 21 मिनट 28 सेकेण्ड में पूरा किया है। सत्या भारती अभी स्कूल नहीं जाती हैं। उनके दूध के दांत अभी नहीं टूटे हैं। खेलने-कूदने की उम्र है, लेकिन वह यमुना नदी में तैराकी के गुरु सीख रही हैं। स्विमिंग कोच त्रिभुवन निषाद के अनुसार पिछले एक साल से सत्या को वह स्विमिंग की ट्रेनिंग दे रहे हैं। उनके मुताबिक उनके पिता देवेन्द्र भारती भी स्विमिंग करते हैं, हालाँकि मूल रूप से वह बालू के खनन का काम करते हैं। करीब एक साल पहले वह सत्या को लेकर उनके पास तैराकी सिखाने के लिये आये थे। उन्होंने बच्ची में प्रतिभा देखी और फौरन बच्ची को तैराकी सिखाने के लिये हामी भर दी। त्रिभुवन निषाद कहते हैं कि पिछले वह चार दशक से बच्चों को स्विमिंग की ट्रेनिंग दे रहे हैं। उनके नवजीवन तैराकी क्लब से अब तक कई बच्चे राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में भी कई उपलब्धि हासिल कर कीर्तिमान बना चुके हैं।

• 21 मिनट 28 सेकेण्ड में स्विमिंग कर पार की यमुना नदी

गर्मियों में बदल गयी रामलला की दिनचर्या

अयोध्या। गर्मी का असर अब अयोध्या के दिव्य व भव्य राम मन्दिर में विराजमान रामलला की सेवा पूजा पर भी दिखाई देने लगा है। राम मन्दिर में पाँच वर्ष के बालक स्वरूप में विराजमान रामलला की देखभाल एक राजकुमार की तरह की जाती है, ऐसे मे बढ़ते तापमान के अनुसार उनके राग भोग और दिनचर्या में बदलाव किया गया है।

दिन का तापमान 34 डिग्री के पार पहुँचने के बाद अब रामलला को ठण्डक देने वाले पदार्थों का भोग अर्पित किया जा रहा है। अब रामलला को दही, ताजे मौसमी फल, जूस और लस्सी का भोग दिया जा रहा है। रामलला को गर्म वस्त्रों की जगह हल्के गोटेदार सूती वस्त्र पहनाये जा रहे हैं जिससे उन्हें आराम मिल सके। पूजा पद्धति में भी बदलाव किया गया है।

हनुमान मन्दिर के शिखर पर लहराया भगवा ध्वज

अयोध्या। चैत्र पूर्णिमा व हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर रामनगरी में भक्ति और उल्लास का अदभुत संगम देखने को मिला। राममन्दिर परिसर स्थित हनुमान मन्दिर के शिखर पर विधि-विधान के साथ भगवा ध्वज फहराया गया। इस भव्य आयोजन के 200 विशिष्ट अतिथि साक्षी बने। जैसे ही ध्वज आकाश में लहराया पूरा परिसर जय श्रीराम और जय बजरंग बली के जयघोष से गूँज उठा। बजरंग दल के संस्थापक जयभान सिंह पवैया और सुरेन्द्र जैन ने संयुक्त रूप से हनुमान मन्दिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया। यह ध्वज 19.7 फीट ऊँचे दण्ड पर आरोहित, भगवा रंग का और 9.3फीट लम्बा (लहर) और 4.7 फीट चौड़ा है।

उत्तर प्रदेश के लोक नृत्य

अनेकानेक विविधताओं से परिपूरित उत्तर प्रदेश अपनी समृद्ध उत्सवधर्मी संस्कृति के लिए भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रसिद्ध है। अवध, ब्रज, काशी तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्रवाहित आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धाराएँ इसे भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र के रूप में प्रतिस्थापित करती हैं। भक्तिरस से ओत-प्रोत पर्व-त्योहार और उनमें गुंथे भावपूर्ण गीत-संगीत, नृत्य तथा वाद्य उत्तर प्रदेश को सांस्कृतिक दृष्टि से गौरव पूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। यहाँ का कथक नृत्य भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में प्रतिष्ठित है। लखनऊ तथा वाराणसी कथक के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

कथक के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित स्थानीय परम्पराओं, मान्यताओं, लोकरीतियों और जीवनशैली से अद्भुत अनेक लोकप्रिय और मनमोहक नृत्य शैलियाँ इतिहास, भक्ति एवं लोक कथाओं को जीवन्त रूप में प्रस्तुत करती है। साथ ही स्थानीय परम्पराओं की प्रवाहमयी धारा बनाकर उनके संरक्षण का कार्य भी कर रही हैं। क्षेत्रीय विविधता को प्रदर्शित करने वाले ये लोकनृत्य राज्य की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग हैं। इनमें से कुछ नृत्य शैलियाँ पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं तो कुछ वीरता और युद्ध कौशल पर और कई नृत्य शैलियाँ ॠतु एवं उत्सव पर होने वाले हर्ष एवं उल्लास का प्रतीक हैं।

उ.प्र. के प्रमुख लोकनृत्य –

जोगिनी नृत्य

जोगिनी नृत्य उत्तर प्रदेश के अवध तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक प्रमुख पारम्परिक लोक नृत्य है जो रामनवमी के पावन अवसर पर प्रभु राम के प्रति अपनी श्रद्धा, भक्ति और उनके अवतरण से प्राप्त होने वाले आनन्द को अभिव्यक्त करने के लिये किया जाता है। यह नृत्य पुरुषों द्वारा स्त्री वेष में सज-धज कर किया जाता है।

नौटंकी

'नौटंकी' उत्तर प्रदेश का लोकप्रिय लोकनाट्य है जिसमें गायन, नृत्य तथा अभिनय का मिश्रण होता है। अवध तथा पूर्वांचल क्षेत्र में नौटंकी ग्रामीण जनता के मनोरंजन का प्रमुख साधन रही है। इस नृत्य–नाट्य में मंच पर कलाकार गीतात्मक रूप से कहानी सुनाते हैं और साथ ही नृत्य भी करते हैं। वाद्य यंत्रों में नगाड़े, हारमोनियम तथा अन्य पारम्परिक वाद्यों का उपयोग किया जाता है। कथानक पौराणिक कथाओं, समकालीन सामाजिक समस्याओं या राष्ट्रवाद से अभिप्रेरित होता है। स्वतंत्रता से पूर्व इसका उपयोग जनता में राष्ट्रवादी भावना जगाने के लिये किया जाता था।

'सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र' के जीवन पर आधारित नौटंकी आमजन में बहुत लोकप्रिय रही है। वर्तमान डिजिटल युग में 'नौटंकी' विधा के कलाकारों को संरक्षण और प्रोत्साहन की विशेष आवश्यकता है।

ढेढिया नृत्य

'ढेढिया' नृत्य उत्तर प्रदेश का पारम्परिक लोकनृत्य है। यह नृत्य भगवान श्रीराम के लंका विजय कर अयोध्या वापस आने के अवसर पर उनके स्वागत में किया जाता है। इस नृत्य में महिलाएँ अपने सिर पर छिद्रयुक्त मिट्टी के घड़े में दीपक जलाकर रखती हैं और नृत्य करती हैं। इस नृत्य में स्थानीय भक्तिपूर्ण गीत गाये जाते हैं जैसे 'बड़े भाग से आये श्रीराम'।

यह नृत्य क्षेत्र की संस्कृति और भक्ति का अद्भुत संगम है जो दशहरा से दीपावली के दौरान किया जाता है। यह लोकनृत्य भाई-बहन के पवित्र रिश्ते तथा समृद्धि का प्रतीक है। नृत्य के माध्यम से बहनें अपने भाइयों की नजर उतारती हैं और लम्बी आयु की प्रार्थना करती हैं।

फरुवाही नृत्य

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल और अवध क्षेत्र विशेषकर अयोध्या तथा गोरखपुर का एक अत्यन्त प्राचीन और पारम्परिक लोकनृत्य है। इस नृत्य में श्रीराम तथा श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन अवधी बोली के गीतों के माध्यम से किया जाता है। पुरुषों द्वारा किये जाने वाले इस नृत्य में नर्तक धोती-कुर्ता और गमछा पहनते हैं। संगीत के लिए नगाड़ा, तास, झाल जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

इस नृत्यशैली का सूत्रपात वीरगाथा काल में सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये हुआ था। अतः इस नृत्य में उर्जा, साहस और वीरता का भाव प्रमुखता से प्रदर्शित होता है। यह नृत्य ग्रामीण संस्कृति की पहचान होने के

साथ ही ऐतिहासिक धरोहर भी है जो पश्चिमी सभ्यता के दौर में लुप्तप्राय होने के कगार पर है। इस लोकनृत्य को भी संरक्षित करने की महती आवश्यकता है।

रासलीला

'रासलीला' ब्रज क्षेत्र (मथुरा, गोकुल, वृन्दावन) का प्रसिद्ध लोकनृत्य है जिसे उत्तर प्रदेश के लोकनृत्य की आत्मा कहा जाता है। यह नृत्य-नाट्य उत्तर प्रदेश की धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं का जीवन्त उदाहरण है जिसकी जड़ें भक्ति परम्परा तथा आध्यात्म से जुड़ी हैं, क्योंकि इसमें श्रीकृष्ण की लीलाओं– विशेषकर राधा रानी तथा ब्रज गोपियों के साथ उनकी दिव्य लीलाओं को दर्शाया जाता है। रासमण्डली, मंच पर सर्वप्रथम ब्रजभाषा के कवियों द्वारा रचित पद एवं गीतों का गायन करती हैं। श्रीकृष्ण और राधारानी की आरती की जाती है। उसके बाद रासलीला का आयोजन होता है।

रासलीला के कथानक भागवतपुराण तथा गीत-गोविन्द के प्रसंगों पर आधारित होते हैं। यह नृत्य मुख्यतः पुरुषों द्वारा किया जाता है, जिसमें स्त्री भूमिकाएँ भी पुरुषों द्वारा ही अभिनीत की जाती हैं।

इसमें संगीत, संवाद तथा मनमोहक नृत्य मुद्राओं का सुन्दर संयोजन होता है जो भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं को मंच पर जीवन्त कर देता है और दर्शकों को सम्मोहित तथा भक्तिरस में निमग्न कर देता है। रासलीला की लोकप्रियता ब्रज से निकलकर पूरे उत्तर प्रदेश तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त है।

चरकुला नृत्य

'चरकुला' नृत्य भी ब्रज क्षेत्र में लोकप्रिय है, जोकि ब्रज की महिलाओं द्वारा किया जाता है।

इस नृत्य में महिलाएँ अपने सिर पर जलते हुए 108 दीपकों के साथ एक बड़े लकड़ी के पिरामिड को सन्तुलित करती हैं। लहँगा चुन्नी पहनकर सिर पर रखे दीपकों को सन्तुलित रखते हुए धीमी किन्तु सुन्दर भावपूर्ण गतिविधियों वाला यह नृत्य, नर्तकी की एकाग्रता और भक्ति का अद्भुत संगम है जो दर्शकों को तालियाँ बजाने के लिए विवश कर देता है। यह नृत्य राधारानी के जन्मोत्सव से जुड़ा है।

इन नृत्यों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड का राई तथा बेड़िया नृत्य, सोनभद्र– मिर्जापुर का शैला, चौलर तथा करमा नृत्य, छपेली नृत्य, मंजरी नृत्य भी काफी लोकप्रिय नृत्य हैं। ये नृत्य उत्तरप्रदेश की लोक संस्कृति के परिचायक और प्रवाहक होने के साथ ही मानव मान की कोमल भावनाओं की सुन्दर-सहज अभिव्यक्ति हैं। आधुनिकता के नाम पर पश्चिम की अन्धा धुन्ध नकल और डिजिटल ग्लैमर के युग में इन लोक कलाओं तथा नृत्यों को विशेष संरक्षण के लिये सतत सामाजिक प्रयासों की आवश्यकता है अन्यथा आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी इन मनमोहक कलाओं से परिपूर्ण सांस्कृतिक थाती को खो देंगे।

कजरी

कजरी पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी तथा मिर्जापुर का वर्षा ऋतु के आगमन पर किया जाने वाला गायन और नृत्य है जिसका आयोजन मुख्यतः सावन तथा भादो के महीने में होता है। नवयुवतियाँ सावन के महीने में अपने मायके जाती हैं और सहेलियों संग झूला झूलती हैं। कजरी में मायके की याद, वहाँ जाने के लिये भाई की प्रतीक्षा और किसी कारणवश न जाने के कारण मन की पीड़ा को बड़े ही मार्मिक तरीके से दर्शाया जाता है। वहीं, सहेलियों संग झूला झूलने की ख़ुशी और प्रकृति के सौन्दर्य के साथ कोमल भावों का मधुर समन्वय कजरी की विशेषता है।

परम्परा, परिवर्तन और 'नवीन भारत' का उदय

बौद्धिक सम्पदा (Intellectual Property) किसी भी राष्ट्र की वह अदृश्य किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली शक्ति है, जो उसके आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी भविष्य को आकार देती है। यह केवल कानूनी शब्दावली भर नहीं है, बल्कि मानवीय मस्तिष्क की रचनात्मकता, शोध और नवाचार का जीवन्त परिणाम है, जिसे विधि द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती है। भारत में इसकी यात्रा विशेष रूप से दिलचस्प रही है, क्योंकि यहाँ यह एक ओर प्राचीन 'सार्वजनिक कल्याण' की भावना से जुड़ी रही है, तो दूसरी ओर आज की प्रतिस्पर्धी 'नॉलेज इकोनॉमी' का अहम आधार भी बन चुकी है।

पेटेन्ट की शुरुआत

औपनिवेशिक काल में बौद्धिक सम्पदा का औपचारिक कानूनी ढाँचा विकसित हुआ। 1856 में पहला पेटेन्ट कानून लागू हुआ, जिसका उद्देश्य मुख्यतः ब्रिटिश हितों की रक्षा करना था। बाद में 1911 का भारतीय पेटेन्ट और डिजाइन अधिनियम आया, जिसने स्वतंत्रता तक इस व्यवस्था को संचालित किया। इस दौर में कानून तो थे, लेकिन उनका झुकाव स्पष्ट रूप से औपनिवेशिक आर्थिक हितों की ओर था।

उत्पाद पेटेन्ट की समाप्ति

स्वतंत्रता के बाद भारत के सामने एक बड़ी चुनौती थी, आम जनता को सस्ती दवाइयाँ और आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराना और साथ ही औद्योगिक विकास को भी गति देना। इसी सन्तुलन को ध्यान में रखते हुए 1970 का पेटेन्ट अधिनियम लाया गया। न्यायमूर्ति अय्यंगर समिति की सिफारिशों पर बने इस कानून ने 'प्रक्रिया पेटेन्ट' को अपनाया और दवाओं व खाद्य पदार्थों में 'उत्पाद पेटेन्ट' को समाप्त कर दिया। इसका असर यह हुआ कि भारतीय कम्पनियाँ नयी प्रक्रियाओं के माध्यम से सस्ती दवाइयाँ बनाने लगीं। यही वह मोड़ था जिसने भारत को 'दुनिया की फार्मेसी' के रूप में पहचान दिलायी।

1995 में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना और TRIPS समझौते के बाद भारत को अपने कानूनों में बदलाव करना पड़ा। 2005 में संशोधन कर 'उत्पाद पेटेन्ट' को फिर से लागू किया गया। इसके साथ ही भारत ने धारा 3(d) जैसा महत्वपूर्ण प्रावधान जोड़ा, जिससे दवाओं में मामूली बदलाव कर नये पेटेन्ट लेने की प्रवृत्ति पर रोक लग सके। नोवार्टिस बनाम भारत संघ के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रावधान को सही ठहराया और सस्ती दवाओं की उपलब्धता को प्राथमिकता दी।

बौद्धिक सम्पदा का व्यावसायीकरण

प्राचीन भारत में बौद्धिक सम्पदा का स्वरूप आज जैसा व्यावसायिक नहीं था। उस समय ज्ञान को 'ब्रह्म' माना जाता था और उसे साझा करना ही विद्वानों का धर्म समझा जाता था। 'श्रुति' और 'स्मृति' के माध्यम से ज्ञान का प्रसार होता था। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और आर्यभटीय जैसे ग्रंथ उस समय की बौद्धिक ऊँचाइयों का प्रमाण हैं। इन रचनाओं के रचनाकारों के पास अपने ज्ञान पर नैतिक अधिकार अवश्य था, पर उन्होंने इसे समाज के हित में खुला रखा। साहित्यिक चोरी को गलत माना जाता था, लेकिन उसे रोकने के लिये कोई औपचारिक कानून नहीं था। शिल्पकारों और कारीगरों के समूह अपने कौशल को गुप्त रखते थे, जो आज के 'ट्रेंड सीक्रेट' की शुरुआती झलक मानी जा सकती है।

डिजिटलीकरण

आज के 'नवीन भारत' में बौद्धिक सम्पदा को एक नयी दृष्टि से देखा जा रहा है। यह अब केवल कानूनी सुरक्षा का विषय नहीं रहा, बल्कि एक मूल्यवान आर्थिक सम्पत्ति बन चुका है। 'आत्मनिर्भर भारत' और 'डिजिटल इण्डिया' जैसे अभियानों ने नवाचार को बढ़ावा दिया है। 2016 की राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति ने इस क्षेत्र को एक स्पष्ट दिशा दी। पेटेन्ट फाइलिंग की प्रक्रिया को डिजिटल बनाया गया है और स्टार्टअप्स व महिला उद्यमियों के लिये इसे आसान और सुलभ किया गया है।

सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा

भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। 'जीआई टैग' के माध्यम से बनारसी साड़ी, कश्मीरी केसर और दार्जिलिंग चाय जैसे उत्पादों को वैश्विक पहचान मिली है। साथ ही, पारम्परिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी ने यह सुनिश्चित किया है कि हमारे प्राचीन ज्ञान का दुरुपयोग न हो और विदेशी कम्पनियाँ उस पर अनुचित अधिकार न जमा सकें।

प्रमुख चुनौतियाँ

इसके बावजूद कुछ चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। अनुसंधान और विकास में निवेश अपेक्षाकृत कम है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण नये कानूनी प्रश्न खड़े हो रहे हैं, और न्यायिक प्रक्रिया में देरी भी एक समस्या है। इन सभी मुद्दों पर गम्भीरता से काम करने की आवश्यकता है।

भारत में बौद्धिक सम्पदा की यह यात्रा परम्परा और आधुनिकता के बीच एक सतत संवाद के रूप में दिखायी देती है। जहाँ कभी ज्ञान को मुक्त रूप से साझा करना ही आदर्श माना जाता था, वहीं आज वही ज्ञान संरक्षित होकर आर्थिक और सामाजिक शक्ति का आधार बनता जा रहा है। 'नवीन भारत' इसी संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, जहाँ वह केवल अनुकरण करने की प्रवृत्ति से आगे बढ़कर मौलिक नवाचार की ओर झुकाव दिखा रहा है। इस बदलती हुई परिदृश्य में यह आवश्यक होता जा रहा है कि समाज का प्रत्येक वर्ग, विशेषकर युवा, शोधकर्ता और उद्यमी, अपने विचारों की वास्तविक क्षमता को पहचाने और उन्हें केवल सृजन तक सीमित न रखकर संरक्षित और संवर्धित भी करे, क्योंकि अब राष्ट्र की प्रगति केवल उसके भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक सृजनशीलता की गहरायी और विस्तार से भी तय होती है। ●

आतंकियों के निशाने पर उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लेकर पूर्व में कुशीनगर और पश्चिम में गाजियाबाद तक कुख्यात प्रतिबन्धित संगठन आइएसआइएस से जुड़े आंतकी और जासूस गिरफ्तार किये जा रहे हैं। पूछताछ के दौरान इनसे चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। सुरक्षाबल व खुफिया एजेंसियाँ अत्यधिक सतर्क हो गयी हैं और हर छोटी बड़ी घटना की जाँच की जा रही है।

कुछ दिन पूर्व उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने मुरादाबाद से प्रतिबन्धित संगठन आइएसआइएस के आनलाइन मॉड्यूल से जुड़े सक्रिय सदस्य हारिस अली को गिरफ्तार किया। हारिस बीडीएस द्वितीय वर्ष का छात्र है और इंटरनेट मीडिया के माध्यम से युवाओं को कट्टरपंथ की ओर आकर्षित करने में सक्रिय भूमिका निभा रहा था। एटीएस को विश्वसनीय सूत्रों से लगातार सूचना मिल रही थी कि उत्तर प्रदेश समेत देश के विभिन्न हिस्सों मे कुछ लोग इंटरनेट के माध्यम से आईएसआईएस की विचारधारा का प्रचार कर रहे हैं। हारिस की गिरफ्तारी व उससे कड़ी पूछताछ के बाद कुछ और गिरफ्तारियाँ हुई हैं और जाँच का दायरा बढ़ रहा है। इसी प्रकार राजधानी लखनऊ से चार आतंकियों मेरठ के शाकिब उर्फ डेविल और अरबाब तथा गौतमबुद्धनगर के पपला पण्डित उर्फ बाबा उर्फ संजू तथा विकास गहलावत उर्फ रौनक को गिरफ्तार किया गया। कुशीनगर से भी आईएसआईएस के संदिग्ध जासूस रिजवान अहमद को गिरफ्तार करने में सफलता मिली है और उससे पूछताछ की जा रही है।

अब तक की जाँच से पता चला है कि इन सभी आतंकियों के तार पाकिस्तानी हैण्डलर से जुड़े थे। इस मॉड्यूल के निशाने पर लखनऊ, गाजियाबाद और अलीगढ़ शामिल हैं। मॉड्यूल पहले इन शहरों में वारदातों को अंजाम देकर दहशत पैदा करता उसके बाद अन्य शहरों को निशाना बनाता। एटीएस की पूँछताछ में आतंकियों ने सभी बातें स्वीकार कर ली हैं। प्रदेश के कई बड़े नेता गिरोह के निशाने पर थे। आरोपितों ने एटीएस को उन नेताओं के नाम भी बताये हैं जिनकी इन लोगों ने रेकी की थी। अब ये पाकिस्तानी हैण्डलर्स के इशारे का इंतजार कर रहे थे। हैण्डलर्स आरोपी जिन सोशल मीडिया एकाउण्ट के माध्यम से जुड़े थे उसमें ओसामा बिन लादेन, फरुतल्ला मोरी, कश्मीर मुजाहिदीन, गजवा-ए-हिन्द जैसे ग्रुप शामिल थे। जिनमें धार्मिक द्वेष फैलाकर देश का वातावरण बिगाड़ने की साजिश के भी सबूत चैट वीडियो के तौर पर मिले हैं। यह गिरोह सोशल मीडिया को हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहा था। यह लोग लोगों को भड़काऊ वीडियो आदि भेजते थे। आतंकी साकिब और अरबाब पश्चिमी यूपी के मॉल और रेलवे स्टेशन को उड़ाने की साजिश रच रहे थे। लखनऊ का रेलवे स्टेशन भी गिरोह के निशाने पर था।

एटीएस ने गिरोह को उस समय पकड़ा जब यह चारों आतंकी रेलवे सिग्नल बाक्स की तस्वीरें खींच रहे थे। उनकी कोशिश थी कि रेलवे सिग्नल बाक्स में गड़बड़ी करके बड़ी ट्रेन दुर्घटना को अंजाम दिया जाये। एटीएस के अनुसार साकिब नाई का काम करता था और इंटरनेट के माध्यम से वह आइएसआइएस को प्रमुख नेताओं, संस्थानों व रेलवे सिग्नल बाक्स की फोटो और और उनसे सम्बन्धित जानकारियाँ भेजता था। चारों आतंकी नरसंहार की तैयारी कर रहे थे।

पाकिस्तानी हैण्डलर की हिन्दू बनाम हिन्दू की साजिश

एटीएस की जाँच में एक और खुलासा हुआ है कि पाक हैण्डलर भारत मे साम्प्रदायिक तनाव फैलाने के लिये बेहद खतरनाक साजिश रच रहे थे। उन्होंने हिन्दुओं को ही हिन्दुओं के खिलाफ इस्तेमाल करने की योजना बनायी थी। पपला पण्डित और विकास इसके प्रमुख मोहरे थे। हैण्डलर ने इन युवकों को पैसे और हूरों का लालच दिया था। साजिश थी कि इन युवकों से हिन्दुओं की गाड़ियाँ और शोरूम जलवाये जायें ताकि समाज में विभाजन पैदा हो और पकड़े जाने पर इन पर हिन्दू आतंकी का ठप्पा लगे। मेरठ के साकिब और अरबाब इन दोनों को आगे कर खुद को पीछे रख रहे थे। पपला और विकास भी जानते थे कि वे एक देशविरोधी नेटवर्क का हिस्सा बन चुके हैं। होली के दिन कीरतपुर में हिन्दू युवक की गाड़ी जलाने वाले आरोपितों से भी आकिब के सम्बन्ध की जानकारी मिली है।

आतंकी रिजवान ने जोड़े 200 युवा

कुशीनगर से पकड़े गये आतंकी रिजवान से जाँच एजेंसियों को महत्वपूर्ण जानकारी मिली है। आइसिस ने रिजवान को इंटरनेट के माध्यम से कई माह तक प्रशिक्षण दिया था। जिसमें बम बनाने से लेकर युवाओं का ब्रेनवाश करने तक का प्रशिक्षण शमिल है। रिजवान को एनसीआर के अलावा देश के अन्य बड़े मन्दिरों को निशाना बनाने के निर्देश आइसिस से मिले थे। इसके लिये रिजवान युवाओं की भर्ती कर रहा था। रिजवान अब तक 200 युवाओं की भर्ती कर चुका था। इन्हें कट्टरपंथी बनाने के लिये वह जिहादी साहित्य उपलब्ध करवा रहा था। सीरिया में बैठे आइसिस के आतंकियों से इनकी बात भी करवाई थी। रिजवान 2015 में आइसिस से जुड़ा था। वह 2017 से 2023 तक आतंकी गतिविधियों में संलिप्तता के कारण मुम्बई की जेल में बन्द रहा किन्तु 2024 में वह जमानत पर बाहर आ गया। बाहर आते ही उसने वापस अपनी गतिविधियाँ शुरू कर दीं। आतंकी गतिविधियों के चलते उसे यूपी एटीएस की मदद से स्पेशल सेल ने फिर से गिरफ्तार कर लिया।

जाँच में कई अन्य अहम खुलासे

अभी तक की जाँच में यह सामने आया है कि आतंकियों ने पुलिस थानों, रेलवे स्टेशनों व सरकारी संस्थानों में धमाके करने की तैयारी की थी। इसके लिये आतंकियों ने टाइम बम बनाने का प्रशिक्षण भी लिया था। वह आगजनी का वीडियो बनाकर पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई को भेजते थे। आतंकियों के मोबाइल से मिले वीडियो की जाँच के बाद पुलिस व सुरक्षा एजेंसियो को एलर्ट कर दिया गया है।

पशुपालन

कम लागत में अधिक आय व स्वस्थ पशुओं का सही तरीका

लखनऊ। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन हमेशा से एक मजबूत आधार रहा है, लेकिन अब इसकी भूमिका पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह केवल सहायक कार्य नहीं, बल्कि एक स्थायी और लाभकारी व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। खेती पर निर्भरता कम करने और नियमित आय सुनिश्चित करने के लिये लोग तेजी से पशुपालन की ओर रुख कर रहे हैं। गाँवों के साथ-साथ शहरों के आसपास भी डेयरी और पशुपालन का दायरा बढ़ा है, जिससे यह क्षेत्र रोजगार का बड़ा माध्यम बनता जा रहा है। सही जानकारी और आधुनिक तकनीकों के साथ यह काम कम जोखिम में बेहतर मुनाफा देने वाला साबित हो रहा है।

वैज्ञानिक पद्धति से बढ़ता उत्पादन

पशुपालन में सफलता के लिये वैज्ञानिक तरीके अपनाना बेहद जरूरी हो गया है। सन्तुलित आहार, स्वच्छ पानी, उचित देखभाल और समय पर टीकाकरण जैसे उपाय पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाये रखते हैं। जब पशु स्वस्थ रहते हैं, तो उनकी उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। खासकर दूध देने वाले पशुओं में इसका सीधा असर दिखाई देता है। नियमित जांच से बीमारियों की शुरुआती अवस्था में पहचान हो जाती है, जिससे इलाज आसान और सस्ता हो जाता है। आधुनिक जानकारी के साथ पारम्परिक अनुभव का मेल पशुपालन को अधिक प्रभावी बना सकता है।

देसी उपचार से घटती है लागत

पशुपालन में खर्च का बड़ा हिस्सा दवाइयों और इलाज पर होता है, लेकिन कई सामान्य समस्याओं का समाधान घरेलू उपायों से भी किया जा सकता है। यही कारण है कि देसी उपचार आज भी काफी उपयोगी माने जाते हैं। पेट की गड़बड़ी में अजवाइन, हींग और गुड़ का मिश्रण दिया जाता है, जो पाचन को सुधारने में मदद करता है। सर्दी-खाँसी जैसी समस्याओं में हल्दी और गुड़ का प्रयोग लाभकारी होता है। छोटे घावों पर नीम या हल्दी का लेप लगाने से संक्रमण कम होता है। इन उपायों से खर्च कम होता है और तुरन्त राहत भी मिलती है, हालाँकि गम्भीर स्थिति में पशु चिकित्सक की सलाह लेना जरूरी होता है।

संक्रामक रोग घटाते दूध उत्पादन

पशुओं में फैलने वाले संक्रामक रोग पशुपालकों के लिये सबसे बड़ी चिन्ता का कारण होते हैं। ये बीमारियाँ तेजी से फैलती हैं और पूरे पशुधन को प्रभावित कर सकती हैं। इसका सीधा असर दूध उत्पादन पर पड़ता है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है। कई बार एक पशु की बीमारी पूरे झुण्ड को बीमार बना देती है इसलिये जरूरी है कि पशुओं को समय पर टीका लगाया जाये और बीमार पशु को तुरन्त अलग रखा जाये। साफ-सफाई का ध्यान रखना और पशुशाला को स्वच्छ रखना भी रोगों के फैलाव को रोकने में मदद करता है।

पशुशाला को साफ रखें

पशुशाला की साफ-सफाई पशुपालन की सफलता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि पशु गन्दगी में रहते हैं, तो उनमें संक्रमण और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। रोजाना गोबर और कचरे को हटाना, फर्श को सूखा रखना और समय-समय पर कीटाणुनाशक का उपयोग करना जरूरी होता है। पशुशाला में हवा और रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिये। पशु स्वच्छ वातावरण में रहते हैं, तो वे कम बीमार पड़ते हैं और उनका उत्पादन बेहतर होता है।

सही आहार और देखभाल जरूरी

दूध उत्पादन बढ़ाने के लिये पशुओं के आहार पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। हरा चारा, सूखा चारा और मिनरल मिक्सचर का सन्तुलित उपयोग पशुओं को जरूरी पोषण प्रदान करता है। इसके साथ ही, नियमित समय पर दुहाई और पर्याप्त पानी देना भी जरूरी होता है। पशुओं को तनावमुक्त वातावरण देना चाहिये, क्योंकि तनाव का असर उनके स्वास्थ्य और दूध उत्पादन पर पड़ता है। जब पशु आरामदायक और सुरक्षित महसूस करते हैं, तो वे बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिससे पशुपालक की आय बढ़ती है।

बीमारियों की पहचान कैसे करें?

पशुपालकों को अपने पशुओं के व्यवहार और स्वास्थ्य पर लगातार नजर रखनी चाहिये। यदि कोई पशु अचानक खाना कम कर दे, सुस्त हो जाये या दूध उत्पादन घट जाये, तो यह बीमारी का संकेत हो सकता है। मुँह-खुर रोग, बुखार या पाचन सम्बन्धी समस्याएँ आमतौर पर देखने को मिलती हैं। इन लक्षणों की समय पर पहचान और इलाज से बड़े नुकसान से बचा जा सकता है। जागरूक पशुपालक ही अपने पशुओं को लम्बे समय तक स्वस्थ रख सकता है।

जागरूकता जरूरी

पशुपालन में सफलता के लि; केवल मेहनत ही नहीं, बल्कि सही जानकारी और अनुभव भी जरूरी है। पशुपालकों को नयी तकनीकों और तरीकों के बारे में जानकारी लेते रहना चाहिये। साथ ही, अपने पशुओं का रिकॉर्ड रखना, उनकी स्थिति पर नजर रखना और समय-समय पर विशेषज्ञों से सलाह लेना भी जरूरी है। जब पारम्परिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक का सही तालमेल बनता है, तो पशुपालन ज्यादा लाभकारी और सुरक्षित बन जाता है। ●

पौधशालाओं के लिए वरदान होंगी बायोडिग्रेडेबल कप

प्लास्टिक प्रदूषण आज केवल शहरों तक सीमित समस्या नहीं रह गया है, बल्कि इसका प्रभाव कृषि क्षेत्र पर भी गम्भीर रूप से देखने को मिल रहा है। विशेष रूप से नर्सरी में उपयोग होने वाली काली पॉलीथिन और प्लास्टिक ट्रे मिट्टी की उर्वरता को धीरे-धीरे नष्ट करती हैं और पर्यावरण के लिये दीर्घकालिक खतरा बनती हैं। ऐसे समय में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के युवा उद्यमी अंकुश जैन द्वारा विकसित "बायोडिग्रेडेबल पोषक कप" न केवल एक तकनीकी नवाचार है, बल्कि यह खेती को प्लास्टिक मुक्त और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम भी है।

11 जैविक तत्वों से बना है कप

चार वर्षों की निरन्तर मेहनत और 260 से अधिक प्रयोगों के बाद तैयार किया गया यह 'स्मार्ट कप' भारत सरकार द्वारा पेटेन्ट प्राप्त कर चुका है, जो इसकी उपयोगिता और मौलिकता को प्रमाणित करता है। 11 जैविक तत्वों- जैसे गोबर, वर्मी कम्पोस्ट, नीम खली, सरसों खली, करंज खली और चूना पत्थर से निर्मित यह कप पौधों को आवश्यक पोषण प्रदान करता है और रोपाई के बाद मिट्टी में घुलकर प्राकृतिक खाद में बदल जाता है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि पौधों को प्लास्टिक के गमलों या पॉलीथिन से निकालने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे जड़ों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता और ट्रांसप्लांट शॉक की समस्या समाप्त हो जाती है।

बचेगा किसानों का समय

इस तकनीक का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इससे नर्सरी तैयार होने का समय 30 दिनों से घटकर केवल 20 दिन रह गया है। यह न केवल किसानों के समय की बचत करता है, बल्कि उत्पादन की गति को भी बढ़ाता है। इसके साथ ही, इस कप में मौजूद पोषक तत्व पौधों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाते हैं, जिससे कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। इससे लागत घटती है और किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।

गुणवत्ता में सुधार

जड़ों के बेहतर विकास के कारण पौधे अधिक मजबूत और स्वस्थ बनते हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता में भी सुधार होता है। इस तकनीक के उपयोग से पौधों की मृत्यु दर लगभग शून्य तक पहुँच जाती है, जो नर्सरी प्रबन्धन के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। स्वस्थ पौधों से 'ग्रेड-ए' उपज प्राप्त होती है, जिसे बाजार में बेहतर कीमत मिलती है। इस प्रकार यह नवाचार न केवल पर्यावरण संरक्षण में योगदान देता है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ करता है।

मितव्ययी

इस बायोडिग्रेडेबल कप की एक और विशेषता इसकी किफायती लागत है। वर्तमान में इसकी कीमत लगभग चार रुपये प्रति कप है, जिसे माँग और उत्पादन के अनुसार और कम किया जा सकता है। पिछले कुछ महीनों में लगभग एक लाख कप का उत्पादन कर इसे मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र और ओडिशा जैसे विभिन्न राज्यों में आपूर्ति किया जा चुका है। यह इस बात का प्रमाण है कि यह नवाचार केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी सफल हो रहा है।

नवाचार की अपार सम्भावनाएं

अंकुश जैन की इस सफलता के पीछे उनकी दूरदर्शिता और कृषि के प्रति उनकी समझ का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्ष 2012 में मुम्बई से एमबीए करने के बाद उन्होंने रियल एस्टेट क्षेत्र में काम किया, लेकिन जल्द ही उन्हें यह एहसास हुआ कि कृषि क्षेत्र में नवाचार की अपार सम्भावनाएँ हैं। इसी सोच ने उन्हें वर्ष 2017 में खेती की ओर प्रेरित किया, जहाँ उन्होंने 11 एकड़ में ग्रीनहाउस स्थापित कर नर्सरी से जुड़ी समस्याओं का गहन अध्ययन किया। इन अनुभवों ने ही उन्हें इस इको-फ्रेंडली कप के विकास के लिए प्रेरित किया, और अन्ततः 2022 में उन्होंने अपने स्टार्टअप "रेयर एग्रीकल्चर वेल्थ प्राइवेट लिमिटेड" की स्थापना की।

राष्ट्रीय स्तर पर भी इस नवाचार को पहचान मिल रही है। दिल्ली और पुणे में आयोजित कृषि प्रदर्शनियों में इसे सराहा गया है, जो इसकी उपयोगिता और सम्भावनाओं को दर्शाता है। यह तकनीक न केवल रासायनिक खेती को जैविक खेती की ओर मोड़ने में सहायक है, बल्कि प्लास्टिक कचरे को कम कर पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि अंकुश जैन का यह "स्मार्ट कप" केवल एक उत्पाद नहीं, बल्कि एक विचार है- एक ऐसी सोच, जो आधुनिक खेती को टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल और लाभकारी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। यदि इस तरह के नवाचारों को व्यापक स्तर पर अपनाया जाये, तो भविष्य में न केवल खेती अधिक सुरक्षित और लाभकारी बनेगी, बल्कि हम एक स्वच्छ और हरित पर्यावरण की ओर भी अग्रसर हो सकेंगे।

लाल आतंक : "माओवाद" से मुक्त हुआ भारत

लखनऊ। गृहमंत्री अमित शाह के समर्पित, रणनीतिक, दूरदर्शी, सशक्त, सार्थक व सटीक प्रयासों के परिणामस्वरूप 1970 से चली आ रही लाल आतंक माओवाद-नक्सलवाद की समस्या से अब भारत को मुक्ति मिल चुकी है। इस बात की घोषणा केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में नक्सलवाद पर लम्बी चर्चा के बाद की। गृहमंत्री ने सदन को बताया कि देश नक्सलियों से मुक्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि देश में हथियारों के बल पर हिंसा करने वाले सभी टॉप नक्सली कमाण्डर या तो मुठभेड़ में मारे जा चुके हैं या आत्मसमर्पण कर चुके हैं या फिर गिरफ्तार हो चुके हैं। देश को नक्सलवाद से मुक्त बनाने के लिये 31 मार्च 2026 की समय सीमा तय की गयी थी। लोकसभा में नक्सलवाद पर गम्भीर बहस हुई। जब शीर्ष नक्सली हिडमा मारा गया, इण्डिया गेट पर उसके समर्थन में नारे लगे तो राहुल गांधी ने उसका वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया। उन्होने कहा कि सत्ता के समर्थन के बिना लाल गलियारा बनाना सम्भव नहीं था। गृहमंत्री ने बताया कि तीन वर्ष में नक्सलवाद प्रभावित 12 राज्य इससे मुक्त हो चुके हैं। तीन वर्ष में ही 706 नक्स्ली मुठभेड़ में मारे गये।

चाय बागान के कर्मयोगियों ने कौतूहल भरी नजरों से निहारी रामनगरी की छटा

अयोध्या। असम की परिधि से बाहर निकल पहली बार 1400 किमी. दूर रामनगरी पहुँचे चाय बागान के कर्मयोगियों ने अयोध्या की छटा को कौतूहल भरी नजरों से निहारा। यहाँ की जीवन्तता देखी और राम मन्दिर सहित अन्य प्रमुख मन्दिरों का दर्शन-पूजन कर काफी अभिभूत हुए। दर्शन-पूजन के बाद श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से अंगद टीले पर आयोजित सामाजिक सम्मिलन में कर्मयोगियों ने अपने अनुभव भी साझा किये। कहा, यह उनके लिये किसी सपने के पूरे होने के समान है। अन्यथा, उनके लिये इतनी दूर आकर दर्शन कर पाना दुरूह था। कर्मयोगियों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ ही अपनी आवभगत के लिये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भी प्रशंसा की।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा पर सुबह असम के डिब्रूगढ़ के मनोहारी टी-एस्टेट के चाय बागान के 30 श्रमिकों की पहली टोली अयोध्या पहुँची थी। इसमें पाँच पुरुष तो 25 महिलाएँ शामिल थीं। यहाँ बस के माध्यम से सभी श्रमिकों को अशोक सिंहल फाउण्डेशन व मनोहारी टी-एस्टेट के सहयोग से लाया गया था। श्रमिकों ने पहले कारसेवकपुरम पहुँच कर थोड़ी देर विश्राम किया। इसके बाद यह दल सरयू के नया घाट पहुँचा और यहाँ पुण्य सलिला में स्नान-ध्यान कर नागेश्वरनाथ मन्दिर, हनुमानगढ़ी, कनक भवन, दशरथ महल सहित अन्य मंदिरों में दर्शन-पूजन किया।

दलित युवक ने की मुस्लिम युवती से शादी

• युवती के परिवार ने दलित युवक की कर दी हत्या

गाजियाबाद। जिले के लोनी में एक दलित समुदाय के प्रोफेसर की उसके ससुराल वालों ने गला घोंटकर हत्या कर दी। मृतक युवक के परिजनों का आरोप है कि मुस्लिम समुदाय की लड़की से विवाह करने के कारण लड़की के घर वालों ने धोखे से बुलाकर घटना को अंजाम दिया है।

मृतक की पहचान प्रोफेसर नितिन जयंत के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि नितिन ने 28 मई 2025 के दिन मुस्कान नाम की युवती के साथ आर्य समाज मन्दिर में प्रेम विवाह किया था। मुस्कान मुस्लिम समाज से थी ओर नितिन दलित समाज से था इसलिये लड़की का परिवार इस विवाह के बहुत विरोध में था। परिजनों का आरोप है कि शादी के बाद से ही मुस्कान के घरवालों की तरफ से लगातार धमकियाँ दी जा रही थीं। इसी बीच मुस्कान गर्भवती हो गयी थी। कुछ दिन पूर्व पति-पत्नी में मामूली विवाद भी हुआ था जिसके बाद मुस्कान अपने पति का घर छोड़कर अपने मायके चली गयी नितिन के परिवार को पहले से ही सन्देह था कि लड़की के परिजन कोई झूठा आरोप लगा सकते हैं इसलिये उन्होंने पूर्व से ही थाने में एक शिकायत भी दे रखी थी।

आरोप है कि मुस्कान के पिता मेहरुद्दीन और चाचा आसिफ अली ने विवाद सुलझाने के लिये नितिन को फोन करके रेलवे फाटक के पास बुलाया। समझौते की बात सुनकर नितिन अपने भाई अमित और ताई के साथ बतायी गयी जगह पर पहुँचा। परिजनों ने बताया कि वहाँ दूसरी गाड़ी में पहले से ही कुछ लोग घात लगाये बैठे थे। वहाँ पहुँचते ही उन लोगों ने नितिन और उसके भाई अमित को पकड़ लिया। इसके बाद अमित के सामने ही नितिन की बेरहमी से हत्या कर दी गयी और उसके शव को पास के ही खेतों में फेंक दिया। पीड़ित परिवार ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से न्याय की गुहार लगायी है और उन्होंने आरोपियों का एनकाण्उटर करने की भी माँग की है।

द्रौपदी की जन्मस्थली का होगा विकास

लखनऊ। महाभारत सर्किट में शामिल काम्पिल्य को विश्वस्तरीय पर्यटन केन्द्र बनाने की तैयारी चली रही है। सरकार ने इस क्षेत्र के विकास के

लिये 4.70 करोड़ रुपये की योजना को मंजूरी दी है। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि काम्पिल्य में पर्यटकों के अनुभव को और अधिक आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिये करीब 2.37 करोड़ रुपए की धनराशि से चार इंटरैक्टिव इंटरप्रिटेशन इंस्टालेशन स्थापित किये जायेंगे। इनके माध्यम से द्रौपदी के जन्म, द्रौपदी और श्रीकृष्ण की मित्रता, द्रौपदी के स्वयंवर तथा कपिल मुनि के आश्रम में दी जाने वाली शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण पौराणिक प्रसंगों को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। क्षेत्र के प्राचीन रामेश्वरनाथ मन्दिर में 30 लाख रुपये से भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण किया जायेगा।

कृष्ण, अर्जुन और भिखारी की कहानी...

एक दिन कृष्ण और अर्जुन रोज़ की तरह टहल रहे थे, तभी उन्हें एक बूढ़ा भीख माँगता हुआ मिला। उसकी हालत देखकर अर्जुन ने उसे सोने के सिक्कों से भरा एक थैला दिया। वह आदमी बहुत खुश हुआ और घर चला गया। रास्ते में जंगल में एक चोर ने उसे लूट लिया। अगले दिन फिर से भीख माँगने निकल पड़ा।

अर्जुन और कृष्ण फिर मिले और जब अर्जुन को उसकी कहानी पता चली, तो उन्हें फिर से दया आयी और उन्होंने उसे एक बड़ा हीरा दिया। वह आदमी उसे घर ले गया और उसे सुरक्षित रखने के लिये एक पुराने बर्तन में रख दिया और सो गया। अगली सुबह उसकी पत्नी नदी से पानी लेने गयी और फिसल गयी और मिट्टी का बर्तन टूट गया। उसे तुरन्त घर का वह बर्तन याद आया जो इस्तेमाल नहीं हुआ था और वह उसे पानी से भरने ले आयी। जैसे ही उसने बर्तन नदी में डुबोया, हीरा बर्तन से निकलकर नदी में चला गया। जब वह घर लौटी तो व्यक्ति घर में बर्तन ढूँढ रहा था और जब उसने उसे अपनी पत्नी के हाथों में देखा, तो उसे पता चल गया कि क्या हुआ होगा। वह दुखी हुआ, वह फिर भीख माँगने के लिये निकल गया।

एक बार फिर अर्जुन और कृष्ण ने उसे देखा और जब अर्जुन ने उस बुरी घटना के बारे में सुना, तो उसने कृष्ण से कहा, 'मुझे नहीं लगता कि इस आदमी की किस्मत में कोई आशीर्वाद लिखा है, मुझे नहीं लगता कि मैं अब उसकी मदद कर सकता हूँ।' फिर कृष्ण ने उस आदमी को दो पैसे दिये और वह आदमी उन्हें लेकर चला गया। फिर अर्जुन ने कृष्ण से पूछा, 'हे प्रभु, अगर सोने के सिक्के और हीरे उसकी हालत नहीं बदल सके, तो दो पैसे उसका क्या भला कर सकते हैं?।' कृष्ण मुस्कुराए और जवाब दिया, 'देखते हैं।'

जब वह आदमी घर जा रहा था तभी उसने एक मछली देखी जिसे अभी-अभी एक मछुआरे ने पकड़ा था और वह प्राण बचाने के लिये जूझ रही थी। उसने मन में सोचा, 'ये दो पैसे वैसे भी मुझे खाना नहीं दे सकते, चलो कम से कम इस जीव की जान तो बचा ही लूँ' और उसने मछली खरीद ली और उसे नदी में फेंकने ही वाला था कि उसने देखा कि मछली की साँस फूल रही थी क्योंकि उसके मुँह में कोई बड़ी रुकावट थी और जब उसे निकाला, तो वह वही हीरा था जो उसने नदी में खो दिया था। वह चिल्लाने लगा, 'देखो मुझे क्या मिला! देखो मुझे क्या मिला'। इसी समय जंगल में उसे लूटने वाला चोर वहाँ से गुज़र रहा था और उसने व्यक्ति को पहचान लिया और सोचा कि व्यक्ति भी उसे पहचान गया है और इसलिये चिल्ला रहा है। इस डर से कि व्यक्ति उसे मरवा देगा, वह दौड़ा और उससे माफ़ी माँगी और उससे चुराये हुए सारे सोने के सिक्के लौटा दिये। व्यक्ति खुश हुआ और सारी दौलत लेकर खुशी-खुशी चला गया। वह सीधे अर्जुन के पास गया और सारी बातें बयीं और उसकी मदद के लिये उसे धन्यवाद दिया और चला गया।

फिर अर्जुन ने कृष्ण से पूछा, 'हे प्रभु, ऐसा कैसे हुआ कि मेरा सोना और हीरा उसकी मदद नहीं कर सका, लेकिन आपके दो पैसे ने कर दिया?' कृष्ण ने जवाब दिया, जब उसके पास सोना और हीरे थे तो वह सिर्फ़ अपने और अपनी ज़रूरतों के बारे में सोच रहा था, लेकिन जब उसके पास दो पैसे थे तो उसने अपनी ज़रूरतों से पहले दूसरे इंसान की जरूरतों को रखा और इसलिये मैंने उसकी जरूरतों का ध्यान रखा।

शिक्षा : हे अर्जुन, जब तुम दूसरों के दर्द और जरूरतों के बारे में सोचते हो और उनकी मदद करने के लिये काम करते हो, तो तुम भगवान का काम कर रहे होते हो और इसलिये भगवान खुद तुम्हारा ध्यान रखते हैं।

हम केशव के अनुयायी हैं

हम केशव के अनुयायी हैं,
हमने तो बढ़ना सीखा है
लक्ष्य दूर है पथ दुर्गम है,
किन्तु पहुँचकर ही दम लेंगे।
बाधाओं के गिरि शिखरों पर,
हमने तो चढ़ना सीखा है।।1।।

ख्याति प्रतिष्ठा हमें न भाती,
केवल माँ की कीर्ति सुहाती।
माता के हित प्रतिपल जीवन,
हमने तो जीना सीखा है।।2।।

अंधकार में बन्धु भटकते,
पंथ बिना व्याकुल दुख सहते।
पथ दर्शक दीपक बन, तिल-तिल,
हमने तो जलना सीखा है।।3।।

तृषित जनों को जीवन देंगे,
शस्य-श्यामला भूमि करेंगे।
सुरसरि देने हिमगिरि के सम,
हमने तो गलना सीखा है।।4।।

धरती को सुरभित कर देंगे,
हे माँ हम मधुऋतु लायेंगे।
शूलों में भी सुमनों के सम,
हमने तो खिलना सीखा है।।5।।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. भारत माता की पहली तस्वीर किसने बनायीं?
(क) राजा रवि वर्मा (ख) अबिन्द्रनाथ टैगोर
(ग) नन्दलाल बोस (घ) अमृता शेरगिल

02. 1739 ई. में भारत पर आक्रमण किसने किया?
(क) अहमदशाह अब्दाली (ख) अंग्रेज
(ग) नादिर शाह (घ) फ्रांसिसी

03. आपातकाल कितने दिनों तक रहा?
(क) 06 महीने (ख) 21 महीने
(ग) 01 वर्ष (घ) 03 वर्ष

04. पानीपत का प्रथम युद्ध कहाँ हुआ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान
(ग) हरियाणा (घ) पंजाब

05. महमूद गजनवी ने भारत पर पहला आक्रमण कब किया?
(क) 712 ई.
(ख) 1526 ई.
(ग) 1191 ई.
(घ) 1000 ई.

06. यू ट्यूब किस देश की कम्पनी है?
(क) भारत (ख) अमेरिका
(ग) चीन (घ) जापान

उत्तर : 1.(ख), 2.(ग), 3.(ख), 4.(ग), 5.(घ), 6.(ख)

वैशाख कृष्ण चतुर्दशी-वैशाख शुक्ल चतुर्दशी : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

17 अप्रैल	ऋषि शुकदेव जयन्ती
18 अप्रैल	महर्षि पराशर जयन्ती
19 अप्रैल	परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया
20 अप्रैल	अक्षय तृतीया, बसवेश्वर जयन्ती
20 अप्रैल	मातंगी जयन्ती
21 अप्रैल	विनायक चतुर्थी, सूरदास जयन्ती
21 अप्रैल	सोमनाथ मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा दिवस
21 अप्रैल	आदिगुरु शंकराचार्य जयन्ती
22 अप्रैल	रामानुजाचार्य जयन्ती
23 अप्रैल	गंगा सप्तमी
24 अप्रैल	बगलामुखी जयंती
25 अप्रैल	सीता नवमी
27 अप्रैल	कामदा एकादशी
29 अप्रैल	प्रदोष व्रत
30 अप्रैल	नृसिंह जयन्ती, छिन्नमस्ता जयन्ती

स्मरणीय तिथियाँ

16 अप्रैल (पुण्यतिथि)	नन्दलाल बोस
17 अप्रैल (पुण्यतिथि)	सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भवानी सिंह, विष्णुकान्त शास्त्री
18 अप्रैल (जयन्ती)	गुरु तेग़ बहादुर
18 अप्रैल (पुण्यतिथि)	तात्या टोपे, सुधाकर पाण्डेय, दामोदर हरी चापेकर
19 अप्रैल (जयन्ती)	महात्मा हंसराज
20 अप्रैल (दिवस)	विश्व होम्योपैथी दिवस (हैनीमैन)
22 अप्रैल (पुण्यतिथि)	स्वामी सच्चिदानंद, मनोज मुकुंद नरवणे
22 अप्रैल (पुण्यतिथि)	जोगेशचंद्र चटर्जी
23 अप्रैल (पुण्यतिथि)	बाबू कुँवर सिंह
24 अप्रैल (पुण्यतिथि)	रामधारी सिंह 'दिनकर', शिवप्रसाद गुप्त
25 अप्रैल (जयन्ती)	चन्द्रबली पाण्डेय, हेमवती नंदन बहुगुणा
25 अप्रैल (पुण्यतिथि)	पण्डित मराजन मिश्रा
26 अप्रैल (जयन्ती)	पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी
26 अप्रैल (पुण्यतिथि)	श्रीनिवास अयंगर रामानुजन, स्वामी रंगनाथानन्द
27 अप्रैल (जयन्ती)	स्वामी विश्वेश्वर तीर्थ
28 अप्रैल (जयन्ती)	हरि सिंह नलवा
28 अप्रैल (पुण्यतिथि)	बाजीराव प्रथम
29 अप्रैल (जयन्ती)	राजा रवि वर्मा, भामाशाह
30 अप्रैल (जयन्ती)	दादा साहब फाल्के, (पुण्यतिथि) हरि सिंह नलवा

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी

निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-
सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन एवं प्रेम सम्बन्धों में अवरोध उत्पन्न होगा। पिता के सुख सानिध्य में वृद्धि होगी। अध्ययन में वृद्धि होगा। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार।

वृषभ राशि-
घर और वाहन सुख में उन्नति होगी। जमीन जायदाद का सुख बढ़ेगा। पिता के स्वास्थ्य को लेकर सामान्य चिन्ता बढ़ेगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा।

मिथुन राशि-
पराक्रम एवं पुरुषार्थ खूब बढ़ेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। भाई बहनों मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। राजनीतिक वर्चस्व में वृद्धि होगी। पैतृक सम्पत्ति का लाभ प्राप्त होगा।

कर्क राशि-
परिवार में शुभ कार्य होंगे। धन सम्बन्धित कार्यों में प्रगति होगी। नौकरी तथा व्यवसाय में वृद्धि होगा। पिता का सहयोग सानिध्य प्राप्त होगा। हृदय या सीने के रोग से तनाव।

सिंह राशि-
वाणी व्यवसाय से लाभ होगा। व्यक्तित्व में निखार आयेगा। पुरुषार्थ एवं परिश्रम में वृद्धि होगा। पिता का सहयोग सानिध्य प्राप्त होगा। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। दाम्पत्य में तनाव या अवरोध होगा।

कन्या राशि-
वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगा। पारिवारिक कार्यों का खर्च बढ़ेगा। दांत की समस्या हो सकती है। पेट एवं पैर की समस्या तनाव दे सकती है परन्तु शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। धन बढ़ेगा।

तुला राशि-
आय एवं व्यापार में वृद्धि होगा। व्यक्तित्व में वृद्धि होगा। सरकारी तंत्र से लाभ की संभावना बनेगी । मानसिक तीव्रता में वृद्धि होगा। दांपत्य जीवन में तनाव की स्थिति।

वृश्चिक राशि-
प्रतियोगी परीक्षाओं में विजय एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। आँखों की समस्या के कारण तनाव होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

धनु राशि-
पैतृक सम्पत्ति का लाभ प्राप्त होगा। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। बौद्धिक क्षमता के आधार पर कार्यों में प्रगति होगी। पिता का सुख सानिध्य प्राप्त होगा। अध्ययन में वृद्धि होगी।

मकर राशि-
सीने की तकलीफ व वाहन आदि को लेकर के तनाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य के कारण सुख में कमी आयेगी। माता के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बढ़ेगी। पराक्रम एवं पुरुषार्थ बढ़ेगा। सरकारी तंत्र से लाभ प्राप्त होगा।

कुम्भ राशि-
दैनिक आय एवं रोजगार में वृद्धि होगा। जीवन साथी का सहयोग सानिध्य प्राप्त होगा। साझेदारी के कार्यों में प्रगति होगी। प्रेम सम्बंधों में सकारात्मकता आयेगी। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। मानसिक उलझन।

मीन राशि-
वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। घरेलू कार्यों को लेकर तनाव बढ़ेगा। आँखों की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। क्रोध में अचानक वृद्धि होगी।

असाध्य रोगियों की होम्योपैथ से चिकित्सा

● प्रो. (डॉ.) विश्वजीत गुप्ता

लखनऊ। आज के आधुनिक दौर में चिकित्सा विज्ञान ने तेजी से प्रगति की है, लेकिन इसके बावजूद कई ऐसे रोग हैं जो पूरी तरह ठीक नहीं हो पाते और लम्बे समय तक मरीज को परेशान करते रहते हैं। मधुमेह, उच्च रक्तचाप, एलर्जी, अस्थमा, त्वचा रोग और माइग्रेन जैसी बीमारियाँ लोगों की जीवनशैली और मानसिक स्थिति दोनों पर असर डालती हैं। ये बीमारियाँ अक्सर पूरी तरह खत्म नहीं होतीं, बल्कि नियंत्रित रखी जाती हैं। ऐसे में होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा पद्धति के रूप में सामने आ रही है, जो केवल लक्षणों को दबाने के बजाय बीमारी के मूल कारण पर काम करती है। यह शरीर की आन्तरिक शक्ति को सक्रिय कर उसे स्वयं ठीक होने की दिशा में प्रेरित करती है। इसी वजह से आज लोग इसे एक सुरक्षित, सस्ता और दीर्घकालिक उपचार विकल्प के रूप में तेजी से अपना रहे हैं।

असाध्य रोग

असाध्य या क्रॉनिक रोग वे होते हैं जो लम्बे समय तक बने रहते हैं और धीरे-धीरे व्यक्ति के जीवन पर गहरा असर डालते हैं। इन बीमारियों में मरीज को नियमित दवाओं और देखभाल की जरूरत होती है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप, रूमेटॉइड आर्थराइटिस, एलर्जी, अस्थमा और ऑटोइम्यून रोग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन रोगों की खास बात यह है कि ये केवल शरीर तक सीमित नहीं रहते, बल्कि मानसिक तनाव, नींद, खानपान और दिनचर्या को भी प्रभावित करते हैं। बीमारियों के पीछे कई कारण होते हैं, जैसे आनुवंशिक प्रवृत्ति, प्रदूषण, असन्तुलित आहार, तनाव और जीवनशैली। यही कारण है कि इनका इलाज केवल दवा से सम्भव नहीं होता, बल्कि समग्र दृष्टिकोण की जरूरत होती है।

होम्योपैथी का सिद्धान्त

होम्योपैथी का मूल सिद्धान्त है "समरूपता द्वारा उपचार", यानी जिस पदार्थ से किसी व्यक्ति में लक्षण उत्पन्न होते हैं, उसी के अत्यन्त सूक्ष्म रूप से उसे ठीक किया जा सकता है। इसमें दवा का चयन बीमारी के नाम से नहीं, बल्कि मरीज के पूरे व्यक्तित्व, लक्षणों और मानसिक स्थिति के आधार पर किया जाता है।

इस पद्धति का उद्देश्य शरीर की "जीवनी शक्ति" को सन्तुलित करना होता है, जिससे शरीर खुद ही बीमारी से लड़ सके। आधुनिक भाषा में इसे शरीर के तंत्रिका, हार्मोनल और प्रतिरक्षा तंत्र के सन्तुलन से जोड़कर समझा जा सकता है।

व्यक्ति केन्द्रित उपचार

होम्योपैथी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें हर मरीज को अलग तरीके से देखा जाता है। एक ही बीमारी के दो मरीजों को अलग-अलग दवाएँ दी जा सकती हैं, क्योंकि उनके लक्षण और शारीरिक-मानसिक स्थिति अलग होती है। उदाहरण के लिये, दो लोगों को माइग्रेन हो सकता है, लेकिन एक को धूप में दर्द बढ़ता है और दूसरे को ठण्ड में। ऐसे में दोनों का इलाज अलग होगा। यही व्यक्तिगत दृष्टिकोण इस पद्धति को खास बनाता है।

असाध्य रोगों में प्रभाव

होम्योपैथी विशेष रूप से लम्बे समय तक चलने वाले रोगों में प्रभावी मानी जाती है। एलर्जी, अस्थमा, सोरायसिस, एक्जिमा, माइग्रेन और गठिया जैसे रोगों में यह धीरे-धीरे लेकिन स्थायी सुधार लाने में मदद करती है। ऑटोइम्यून रोगों में, जहाँ शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली खुद के ऊतकों पर हमला करती है, होम्योपैथी सन्तुलन बनाने का काम करती है। वहीं मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसे रोगों में यह जीवनशैली सुधार के साथ सहायक भूमिका निभाती है।

न्यूनतम दुष्प्रभाव

होम्योपैथिक दवाएँ अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा में दी जाती हैं, जिससे इनके दुष्प्रभाव बहुत कम होते हैं। यही कारण है कि यह बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिये भी सुरक्षित मानी जाती है। लम्बे समय तक दवा लेने के बावजूद शरीर पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। यह पद्धति शरीर की संवेदनशीलता को बढ़ाकर उपचार करती है, न कि उसे दबाती है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता होती मजबूत

होम्योपैथी शरीर की इम्यूनिटी यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करती है। इससे शरीर खुद ही संक्रमण और बीमारियों से लड़ने में सक्षम हो जाता है। जिन लोगों को बार-बार सर्दी, खाँसी या एलर्जी होती है, उनमें होम्योपैथी से धीरे-धीरे इन समस्याओं की आवृत्ति कम हो सकती है।

शोध और चिकित्सकीय अनुभव

भारत में सीसीआरएच (सेन्ट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन होम्योपैथी) सहित कई संस्थान इस पद्धति पर शोध कर रहे हैं। कई अध्ययनों में एलर्जिक राइनाइटिस, अस्थमा, गठिया और त्वचा रोगों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। क्लिनिकल अनुभव भी यह दर्शाते हैं कि जो मरीज लम्बे समय तक अन्य उपचारों से राहत नहीं पा सके, उन्हें होम्योपैथी से लाभ मिला है। हालाँकि, हर मरीज में परिणाम अलग-अलग हो सकते हैं और उपचार की अवधि भी भिन्न हो सकती है।

बदलती सोच और बढ़ती लोकप्रियता

लोग केवल बीमारी का इलाज नहीं, बल्कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य चाहते हैं। वे ऐसे उपचार की तलाश में हैं, जो सुरक्षित हो, कम खर्चीला हो और लम्बे समय तक लाभ दे सके। इन्हीं कारणों से होम्योपैथी की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। यह न केवल रोगों के इलाज में मदद करती है, बल्कि जीवनशैली सुधार और मानसिक सन्तुलन में भी सहायक होती है। समग्र दृष्टिकोण, न्यूनतम दुष्प्रभाव और उपचार की विशेषता के कारण होम्योपैथी आज के दौर में एक भरोसेमन्द विकल्प के रूप में उभर रही है।

लेखक : BHMS, M.D. (होम्योपैथी), प्रैक्टिस ऑफ़ मेडिसिन कम्युनिटी मेडिसिन डिपार्टमेंट, रिसर्च मेथोडोलॉजी और बायोस्टैटिस्टिक्स स्टेट नेशनल होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, लखनऊ, उत्तर-प्रदेश।